अप्रैल 2026

दादावाणी

Retail Price ₹ 20

वेरावल त्रिमंदिर तीर्थक्षेत्र

अडालज : SMHT स्पेशियल सेशन : ता. 20 फरवरी 2026

स्वागत
वैष्णो देवी मंदिर प्रतिकृति
द्वारका मंदिर प्रतिकृति
रामेश्वरम् प्रतिकृति
कल्चरल प्रोग्राम
सत्संग

दिल्ली : सत्संग-ज्ञानविधि : ता. 27 फरवरी से 1 मार्च 2026

स्वागत
दर्शन
सत्संग
इन्वाईटी
सेवार्थी सत्संग

वर्ष : 21 अंक : 6
अखंड क्रमांक : 246
अप्रैल 2026
पृष्ठ - 28

Editor : Dimple Mehta
© 2026
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Multiprint
Opp. H B Kapadiya New High School, At-Chhatral, Tal: Kalol, Dist. Gandhinagar - 382729

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
5 साल
भारत : 1000 रुपये
वार्षिक
भारत : 200 रुपये
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

जीवनसाथी की पसंदगी में युवाओं को सही समझ - 1

संपादकीय

आधुनिक युग में युवाओं के जीवन का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है शादी और उसके लिए जीवनसाथी की पसंदगी। जिसके साथ सुख, सामाजिक स्वीकृति और ज़िम्मेदारियाँ जुड़ी हुई हैं। परंतु वर्तमान युग के युवाओं के लिए जीवनसाथी की पसंदगी एक जटिल प्रश्न है। शादी करना अच्छा है या न करना अच्छा है? यदि शादी करें तो पात्र की पसंद कैसे और किस तरह करें? ऐसे अनेक द्वंद्व युवा मानस को घेर लेते हैं। प्रस्तुत अंक में, परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) जीवनसाथी की पसंदगी पर व्यवहारिक ज्ञान प्रदान करते हैं, जो युवाओं को शादी से पहले सही समझ विकसित करने में मार्गदर्शक बनेगा।

दादाश्री स्पष्ट रूप से बताते हैं कि शादी ज़्यादातर 'अनिवार्य' है। यह तो कुदरत का नियम है। क्योंकि वह पूर्वजन्म का हिसाब है, जिसे चुकाना ही पड़ता है, इसमें छुटकारा नहीं है। कई लोग पूछते थे कि जीवनसाथी की पसंदगी के समय जन्म कुंडली मिलाना ज़रूरी है या नहीं? तब दादाश्री कहते थे कि किसी को जन्म कुंडली देखना ही नहीं आता न! इसलिए यदि नहीं मानते हो तो इसमें मत पड़ना। जीवनसाथी की पसंदगी में माता-पिता को बच्चों पर दबाव नहीं डालना चाहिए और युवाओं को भी दूसरों के, माता-पिता के जीवन के अनुभवों का निष्कर्ष निकालने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

जीवनसाथी की पसंदगी में युवा अक्सर बाहरी दिखावे या भौतिक सुख-सुविधाओं को प्राथमिकता देते हैं। प्रेम और संस्कार के बदले जब बाहरी दिखावे या पैसे का महत्व बढ़ जाता है तब शादी 'सौदेबाजी' बन जाती है। 'शादी खुद के डेवेलपमेन्ट में ही होनी चाहिए' यह सूत्र देकर, वे भारतीय पात्र और साथ में 'कुल' और 'जाति' देखने का सुझाव देते हैं। क्योंकि इन दोनों के समन्वय से संस्कारी पीढ़ी का निर्माण होता है। दादाश्री के मत से इन्टरकास्ट मेरेज़ में हर्ज़ नहीं है, क्योंकि आखिर में जहाँ हिसाब होता है वहीं शादी होती है। फिर भी वे समान कुल और उच्च संस्कार को प्राथमिकता देते हैं। उससे स्वभाव और संस्कार मिलते-जुलते होने से जीवन सरल होता है।

हाँलाकि, 'ज्ञान' लेने के बाद जिनकी शादी करने की इच्छा ही न हो, इसके लिए खुद का निश्चय पक्का हो तो अपना 'व्यवस्थित' का ज्ञान उनको ब्रह्मचर्य के मार्ग में मदद करता है। दूसरी तरफ, जो शादी करना चाहते हैं, उनके लिए योग्य पात्र की पसंदगी आखिर में 'व्यवस्थित' के आधार पर ही होती है। फिर भी, शादी से पहले व्यवस्थित नहीं कहा जा सकता, तब तक योग्य दिशा में प्रयत्न करने पर जोर देते हैं।

प्रस्तुत अंक में, ज्ञानी पुरुष की बोधकला और ज्ञानकला से युवा अविवाहित लड़के-लड़कियों को सुंदर मार्गदर्शन मिलता है, जिससे माता-पिता और बच्चों में सुमेल बना रहे और योग्य पात्र की पसंदगी हो सके! ताकि उनका विवाहित जीवन सुखमय हो जाए और आगे अध्यात्मिक मार्ग में प्रगति कर सकें।

जय सच्चिदानंद

जीवनसाथी की पसंदगी में युवाओं को सही समझ - 1

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

दोनों में से कौन सा अच्छा?

बहन, तू पढ़ तो रही है, लेकिन फिर शादी तो करनी पड़ेगी न?

प्रश्नकर्ता : शादी करनी अच्छी है या न करनी अच्छी है?

दादाश्री : यदि छुटकारा हो सके, ऐसा हो तो न करनी अच्छी, परंतु छुटकारा हो सके, ऐसा नहीं है। ऐसा हिसाब लेकर ही आए हैं। वह हिसाब तो चुकाना पड़ेगा न? वह अपने हाथ का खेल नहीं है। शादी में थोड़ा बहुत जोखिम होगा या नहीं होगा?

प्रश्नकर्ता : भयंकर जोखिम है।

दादाश्री : क्या शादी में जोखिम होता है? ब्राह्मण शादी करावाता है, क्या उसमें भी जोखिम होता है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, बोदरेशन आता है।

दादाश्री : हाँ, शादी की इसलिए सारा बोदरेशन सिर पर आता है! और सास अच्छी न मिले तो भी जोखिम। ससुर अच्छे न मिले तो भी जोखिम। फिर पति किच-किच करनेवाला मिले तो क्या करें? अब, यह सब कोई चखकर थोड़े ही लिया जा सकता है? क्या इसे आम की तरह काटकर चखा जा सकता है? वह तो वहाँ जैसा निकला वैसा सही!

प्रश्नकर्ता : परंतु वह तो नसीब पर छोड़ देना होता है न?

दादाश्री : वह नसीब क्या होगा? हर एक का नसीब अलग-अलग होता है न!

प्रश्नकर्ता : वह तो विधाता ने जो लिखा है वही होता है। उसमें कोई कुछ नहीं कर सकता।

हर किसी के लिए शादी अनिवार्य

दादाश्री : शादी अपनी मर्जी से करते हो क्या?

प्रश्नकर्ता : सभी करते हैं इसलिए हमें भी करनी पड़ेगी!

दादाश्री : यानी ऐच्छिक है न? या अनिवार्य रूप से करनी पड़ती है, ड्यूटी बाउन्ड है? मार-ठोककर शादी करवाते हैं, वह ड्यूटी बाउन्ड है। तुझे लगता है कि ड्यूटी बाउन्ड है?

प्रश्नकर्ता : अभी विचार नहीं आते कि शादी करनी है।

दादाश्री : नहीं, लेकिन बुद्धि से सोचने पर कैसा लगता है? इन सभी ने शादी की, तो क्या सभी ने राजी-खुशी से शादी की?

प्रश्नकर्ता : शादी सुख नहीं देती, लेकिन कम्पल्सरी (अनिवार्य) ही है न, करनी ही पड़ती है।

दादाश्री : हाँ, कम्पल्सरी है!

प्रश्नकर्ता : कम्पल्सरी क्यों है?

दादाश्री : क्योंकि आपने पिछले जन्म में तय नहीं किया था कि 'शादी नहीं करनी है'। ऐसा तय किया होता तो शादी नहीं करनी पड़ती!

कुछ लोग शादी करनी चाहते हैं, वे ज़िंदगी भर 'इस साल होगी, अगले साल होगी', ऐसा करते-करते पचास साल के हो जाते हैं! फिर भी आशा रखते हैं कि नहीं, अभी भी हो सकती है। अरे, पचास साल का हो गया, अब किसकी आशा रख रहा है! इस तरह जैसे नहीं मिलती, उसी तरह मिले उसमें से भी आप छूट नहीं सकते, ऐसा कुदरत का कॉन्ट्रैक्ट किया हुआ है। करार हो चुके हैं सारे।

तूने कुछ सार निकाला है कि शादी करने जैसी है या नहीं करने जैसी है?

प्रश्नकर्ता : शादी करने जैसी नहीं है।

दादाश्री : ऐसा! सही है, क्योंकि ये इन्द्रिय सुख एक तरफा हैं। आँख के, कान के, नाक के, ये सब एक तरफा इन्द्रिय सुख हैं। लेकिन यह विषय वह तो दो तरफा है, इसलिए दावा करेगी और वह दावा कब करेगी वह कह नहीं सकते। वह कहेगी कि सिनेमा देखने चलो और आप कहोगे कि नहीं, आज मुझे ज़रूरी काम है, तो वह दावा करेगी। वह कहेगी, मुझे जाना है और आप मना कर रहे हो। यानी वह दावा दायर करती है ऐसा होता है या नहीं होता?

प्रश्नकर्ता : ऐसा ही होता है।

दादाश्री : अब वह स्त्री यदि पहले से समझ जाए कि इनके कर्म के उदय ने मना किया है, तो समझदारीपूर्वक हल आएगा लेकिन उन्हें ऐसा भान नहीं है न! वह तो कहेगी कि इन्होंने किया ही नहीं। मोह सारा घेर लेता है और 'करता कौन है' वह खुद को पता नहीं है। वह तो ऐसा ही समझती है कि ये ही करते हैं, ये ही नहीं आते, इनकी ही इच्छा नहीं है आने की।

शादी, अनिवार्य?

शादी तो करता है और फिर विधुर होता है! शादी करता है इसलिए फिर विधुर होना पड़ता है न! शादी करना और विधुर होना यह चलता ही रहता है न! शादी की होगी तो विधुर होगा न! शादी ही न की हो तो विधुर होगा ही कैसे? यह संसार ही सारा ऐसे द्वंद्व गुणोंवाला है।

शादी न करनी पड़े तो उसके जैसी उत्तम चीज़ तो कोई भी है ही नहीं!

प्रश्नकर्ता : तो फिर लोग शादी किसलिए करते हैं?

दादाश्री : वह तो अनिवार्य करते हैं न, इसलिए उससे उनका छुटकारा ही नहीं हो पाता न!

प्रश्नकर्ता : तो शादी, वह चीज़ ही किसलिए है?

दादाश्री : शादी, वह तो कुदरत का नियम है कि *पुद्‌गल* में से *पुद्‌गल* का जन्म होता ही रहता है! उसका वह स्वभाव ही है सारा!

प्रश्नकर्ता : तो फिर जो शादी नहीं करते, वे पुण्यशाली हैं, ऐसा क्यों कहते हो?

दादाश्री : वह तो फिर जिसे ब्रह्मचर्य के भाव उत्पन्न हुए हों उसे तो बहुत आनंद रहता है, सुख रहता है न! वर्ना सांसारिक भाव में तो सारी परेशानी ही है न! और उसमें तो थोड़ा सा सांसारिक सुख लेने जाते हैं, तो उसमें कितने अनहद दुःख उत्पन्न हो जाते हैं न!

प्रश्नकर्ता : शादी करने का भाव सभी को क्यों होता है, वह तो कुदरती है न?

दादाश्री : कुदरती नहीं है, यह तो अनिवार्य है! यह ऐच्छिक नहीं है। मेरेज़ तो सभी करते ही हैं, लेकिन खुद की इच्छा से नहीं, करनी ही पड़े ऐसा अनिवार्य है। यह जन्म भी अनिवार्य है, मरण भी अनिवार्य है! मरण अनिवार्य नहीं होता न, तो कोई मरता ही नहीं! ऐच्छिक तो क्या है

कि खुद कौन हूँ? भगवान क्या है? भगवान को पहचानना, वह ऐच्छिक है! खाना-पीना सब कुछ अनिवार्य है!

प्रश्नकर्ता : यदि यह अनिवार्य है, तो इससे छूटते हैं, वह कैसे?

दादाश्री : अनिवार्य में से तो नहीं छूट सकते, फिर भी जो छूट जाता है वह छूटने का ऐसा अनिवार्य लेकर ही आया है। ऐसा हिसाब पहले से लेकर आया है!

इन्डियन रोज़ लड़ें फिर भी एक

तुझे तो जल्दी शादी करनी है या फिर देर से?

प्रश्नकर्ता : देर से।

दादाश्री : ऐसे ही तुझसे रहा जाएगा? बिना शादी के रहा जाएगा?

प्रश्नकर्ता : दो साल के बाद। अभी पढ़ना बाकी है।

दादाश्री : हाँ, वह पूरा करना। लेकिन मँगनी करने में हर्ज़ है?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : मँगनी करके रखे तो चलेगा न! शादी अभी मत करना, लेकिन मँगनी करके रख लेना! अमेरिकन से शादी करनी है या इन्डियन से?

प्रश्नकर्ता : इन्डियन से। पापा को खुश रखना है इसलिए।

दादाश्री : वर्ना तुझे उन्हें खुश नहीं रखना हो तो? तो क्या अमेरिकन से शादी करेगा? तेरे लिए तुझे कौन सी ज़्यादा पसंद है? फर्स्ट प्रेफरन्स क्या है तेरा?

प्रश्नकर्ता : कोई भी लड़की चलेगी, मैं कलर-वलर में नहीं मानता। जो लड़की अच्छी हो, अमेरिकन हो या इन्डियन हो, तो भी हर्ज नहीं।

दादाश्री : लेकिन ऐसा है न, इन अमेरिकन आमों और हमारे आमों में फर्क होता है, यह तू नहीं जानता? क्या फर्क होता है हमारे आमों में?

प्रश्नकर्ता : हमारे मीठे होते हैं।

दादाश्री : हाँ, तब फिर देखना। वह मीठी चखकर तो देख, अपने इन्डिया की।

प्रश्नकर्ता : अभी चखा नहीं है।

दादाश्री : नहीं। लेकिन इसमें फँसना नहीं, फॉरेन में फँसने जैसा नहीं है। देख, तेरी मम्मी और पापा को तूने देखा न! तो उन दोनों में कभी मतभेद होता है या नहीं होता?

प्रश्नकर्ता : मतभेद तो होता है।

दादाश्री : हाँ, लेकिन उस वक्त तेरी मम्मी घर छोड़कर चली जाती है कभी?

प्रश्नकर्ता : नहीं, नहीं।

दादाश्री : और वह अमेरिकन तो 'यू यू' कहकर यों बंदूक (दरवाज़ा) दिखाकर चली भी जाती है और यह तो पूरा जीवन रहती है। इसलिए हम तुझे समझाते हैं कि भाई, ऐसा मत करना। इस तरफ जाने के बाद में पछताओगे। यह (इन्डियन) तो आखिर तक साथ रहती है, हाँ... झगड़ा करके फिर सुबह तक रिपेयर हो जाती है।

प्रश्नकर्ता : बात सही है।

दादाश्री : इसलिए अब तय कर ले कि मुझे इन्डियन लेडी के साथ शादी करनी है। इन्डियन में तुझे जो पसंद हो वह, ब्राह्मण, बनियाइन जो तुझे अच्छी लगे, उसमें हर्ज नहीं।

प्रश्नकर्ता : यदि उसे पसंद हो तो मँगनी करके रखें, इसे समझाइए।

दादाश्री : हाँ, मँगनी करके रखेंगे। वे दिखाएँ न, तो पास कर देना अब कि यह चोइस है, कहना। फिर उसे सेटेलमेन्ट हो जाए उसके बाद शादी करना। इतना करना तू! कभी न कभी शादी करे बिना चले ऐसा नहीं है, क्या ब्रह्मचारी रहा जा सके, ऐसा है?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : तो फिर तुझे पहले से सेटेलमेन्ट लेने में क्या हर्ज़ है? बाद में तेरी पसंद की लड़की न मिले और फिर दूसरी कैसी भी मिले, उसके बजाय अभी ही ढूँढ लें, तो अच्छी मिल जाए, तो तेरा काम बन जाएगा। आज के आज ही नहीं, छह महीने-बारह महीने देखते रहें...!

प्रश्नकर्ता : वह कहता है कि अगर सभी पसंद आ गई तो?

दादाश्री : जो तुझे पसंद है, लेकिन तू उसे नापसंद हो तब क्या होगा? एक लड़की को उसके पिता ने एक लड़का दिखाया तब पिता को कहती है, इस बेवकूफ को मेरे पास कहाँ से ले आए! ये लड़कियाँ! जो ऐसी आज़ाद होती है वह कह देती है।

पात्र की पसंदगी में मत करो दखल

प्रश्नकर्ता : लेकिन कई जगह तो पिता दबाव डालकर शादी करवाते हैं, खुद मना करता है फिर भी।

दादाश्री : लेकिन वह पिता को ऐसा नहीं करना चाहिए। आज-कल के लड़के पढ़ें लिखे हैं न, पिता को लड़कों को उनके मत से चलने देना चाहिए। पिता को बीच में दखल नहीं करना चाहिए। मैं तो पिता से कहता हूँ कि, 'दखल मत करो।'

लड़के पर दबाव मत डालना वर्ना आप पर आएगा कि मेरे पिता ने बिगाड़ा। उसे (संसार) चलाना नहीं आता इसलिए बिगड़ता है और आक्षेप आप पर आता है। घोड़ी तो तीन हज़ार की थी, परंतु उस पर बैठते ही गिर गया तब कहता है कि मुझे घोड़ी ने गिरा दिया। घनचक्कर! घोड़ी की बुराई करते हो? घोड़ी को बदनाम करते हो? घोड़ी तो तीन हज़ार रुपये देकर लाया है, तुझे बैठना नहीं आता उसमें घोड़ी को क्यों बदनाम कर रहा है? लेकिन यह जगत् तो ऐसा है! 'बहु में अक्ल नहीं है', कहता है और वह है अक्ल का बोरा!

उसे बुलाकर कहना, 'हमें लड़की पसंद आई है, अब तुझे पसंद हो तो बोल और पसंद नहीं हो, तो हम रहने दें।' तब यदि वह कहे, 'मुझे पसंद नहीं,' तो उसे रहने दो। स्वीकृति तो अवश्य करवाना बेटे से, वर्ना बेटा भी विरुद्ध हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : 'व्यवस्थित' में जो बहु आनेवाली है, वह आने ही वाली है ऐसे करके बैठे रहना चाहिए या फिर कुछ इस तरह हमें प्रयत्न करते रहना चाहिए?

दादाश्री : लेकिन वह बैठे रहना तो हो ही नहीं पाएगा।

जन्म कुंडली मिलाना, एक प्रकार का दबाव

प्रश्नकर्ता : कई माता-पिता जन्म कुंडली में मानते हैं, तो क्या वह ठीक है? वह सही बात है?

दादाश्री : वह सब बात ठीक है। जन्म कुंडली तो आज-कल देखना ही नहीं आता न लोगों को! वह एक प्रकार का दबाव है। उसके बजाय आप समझदारी से काम करो, उसमें क्या गलत है? आप सब सावधानीपूर्वक करो और उसके बावजूद भी परेशानी आए तो फिर प्रारब्ध का खेल है! बाकी हर तरह से सावधानीपूर्वक करना और जब शादी करोगे तब मैं आपको समझा दूँगा कि आपका इतना फर्ज़ है। लड़के को भी

मैं समझा दूँगा कि तेरा इतना फर्ज़ हैं। दोनों फर्ज़ ज़िंदगी भर टिकेंगे।

अपने डेवेलपमेन्ट में शादी करना

अब शादी-वादी कर, तेरी उम्र हो गई है। तुझे जाति में ही करना है या अन्य जाति में करना है? बाकी बाहर तो रत्नागिरि हाफूस जैसी दिखाई देगी लेकिन काटने पर अंदर से खट्टी लगेगी। इसलिए तुझे जानी-पहचानी और अनुभववाली लेनी चाहिए। भले ही फिर ऊपर का रंग थोड़ा ठीक न दिखे लेकिन अपने डेवेलप कोम की जान-पहचानवाली लेनी चाहिए! एक जैन के लड़के ने फॉरेन की ढूँढ ली। मैंने उससे पूछा, 'तुझे क्यों पसंद आई?' तो कहता है, 'ब्यूटीफुल है!' मैंने कहा, 'अरे, तू किसे ब्यूटीफुल कहता है?' आम ऊपर से सुंदर दिखे और अंदर से खट्टा निकले उनका क्या करना है? ऊपर से तो सुंदर दिखे लेकिन हमें तो अंदर का देखना है या बाहर का?

प्रश्नकर्ता : अंदर का।

दादाश्री : ऐसा तुझे भरोसा है न!

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा।

दादाश्री : ये फॉरेन की स्त्रियाँ सभी हाफूस के आम जैसी सुंदर दिखाई देती हैं! लेकिन खट्टी निकलती हैं। मुँह बिगड़ जाएगा तब फिर कहाँ जाएगा? फिर पूरी ज़िंदगी घुटन ही होगी न? सहन नहीं होगा फिर! आम यदि खट्टे निकलें तो फेंक देते हैं लेकिन स्त्री को कहाँ फेंक सकते हैं?

प्रश्नकर्ता : जो मतभेद हो उसे सुलझाने का प्रयत्न करना चाहिए।

दादाश्री : मेरा कहना है कि मतभेद का सवाल नहीं है। यह तो अन्डर डेवेलप से शादी करना वहाँ सब खट्टा ही निकलता है! शादी अपने डेवेलपमेन्ट में ही होनी चाहिए! इसलिए शादी कहाँ करनी है उसकी कोई लिमिट तो होनी चाहिए न? वर्ना कोई भी (फॉरेन की) ले आने के बाद क्या होगा? दिखाई देती है सुंदर लेकिन डेवेलपमेन्ट साथ बिल्कुल कच्चा!

अरे, (उसमें) धोखा खाएगा। जैन लड़के को मना किया फिर शादी नहीं की। जैन लड़का फॉरेन की लड़की से शादी करे तो हालत खराब हो जाएगी। क्या उससे शादी होती होगी? वह तो काम की ही नहीं है और अपनी जाति में ही शादी करे वह अंदर से मीठे अंगूर जैसी निकलती है और वह फिर पूरी ज़िंदगी भर (साथ) रहती है। फॉरेन की तो छह महीनों में फिर अलग हो जाती है।

समान संस्कार, सरल संबंध

प्रश्नकर्ता : दादा, यह मेरी बहन है, ये आपके पास आई थी, तब इसने आपके पास निश्चय किया था कि मैं दिगंबर जैन से ही शादी करूँगी लेकिन अब इसे ऐसा लगता है कि मुझे दिगंबर जैन लड़का इतना अच्छा नहीं मिलेगा, तो क्या होगा? तो कहती है कि (दादाजी ने) मेरी यह विधि तो की है और यदि ऐसा न हो पाए और मैं दूसरे से शादी करूँ तो फिर मुझे पाप लगेगा या मुझे कोई बंधन आएगा?

दादाश्री : दूसरे से शादी करनी हो तो भी वह अपना गुजराती होना चाहिए और इन्डियन होना चाहिए। मज़दूर से शादी करने के लिए तैयार हो जाएगी तू? तुम्हारे वहाँ मज़दूर आता है? एकदम गोरा हो तो क्या उससे शादी करने के लिए तैयार हो जाओगी?

प्रश्नकर्ता : नहीं, नहीं। उस मज़दूर से शादी नहीं करूँगी।

दादाश्री : तो फिर फर्स्ट प्रेफरन्स दिगंबर जैन, सेकन्ड प्रेफरन्स दिगंबर न मिले तो कोई भी जैन, वह न मिले तो कोई गुजराती बनिया,

वह न मिले तो ब्राह्मण, पटेल, गुजराती बस.. या अमेरिकन से शादी करनी है?

प्रश्नकर्ता : नहीं। उन लोगों के विचार अलग नहीं होंगे?

दादाश्री : बिलीफ तो सेपरेट ही होती है। कहीं ही बिलीफ मिलती आती है।

अब ये दिगंबरी जैन में शादी करने से उसके विचार और अपने विचार मिलते आते हैं थोड़े बहुत, विचार समान हो सकते हैं। तू जैन है तो जैन होगा तो फीटनेस अच्छी रहेगी। फीटनेस, सब साइड से फीट हो जाएगी और वे दूसरे तो साँप मारेंगे, जीव-जंतु मारेंगे और सब कुछ करेंगे। खटमल, तिलचट्टे मारेंगे, सबको मारेंगे। तुझे अच्छा लगेगा, वह मारेगा उस समय?

प्रश्नकर्ता : नहीं, बिल्कुल नहीं।

जातिवाली को ही हाँ, पसंदगी के समय

दादाश्री : अब, तूने आज ये सारी जो योजना की, बोला उस योजना अनुसार करेगा या योजना में बदलाव करेगा?

प्रश्नकर्ता : नहीं, उसके अनुसार ही बरतूँगा।

दादाश्री : तूने कहा कि मुझे अमेरिकन या पारसी ऐसी-वैसी नहीं चाहिए और इन्डियन चाहिए। तो अब फिर ऐसी कोई अमेरिकन या पारसी लड़की जा रही हो तो तू उसकी तरफ देख रहा हो तब क्या तुझे यह याद आएगा कि मैंने तो ऐसा निश्चय किया है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, याद तो आएगा।

दादाश्री : तो उसकी तरफ बिल्कुल देखना ही नहीं, यह अपनी लाइन ही नहीं है। अब जब दूसरी जगह देखें इन्डियन में, उससे भी आपको अभी लेना-देना नहीं है और यह (कुदृष्टि से) देखते हैं, वह गुनाह करते हैं, वह अपनी समझ में रहना चाहिए। इसलिए मैं तुझे (उपाय) बताऊँगा कि देखने के बाद तुझे क्या करना है? देखने के बाद उसके विचार साथ आते हैं। लेकिन फिर क्या करना है, वह बताऊँगा। ताकि वह मिटा सकें। दाग तो लग गया, लेकिन उसके बाद साबुन लगा दें, तो वह मिट जाता है। इसलिए कपड़ा साफ का साफ रहता है। मिटाने के साधन नहीं होने से फिर उस रूप हो जाते हैं बेचारे।

प्रश्नकर्ता : उस रूप हो जाते हैं यानी क्या?

दादाश्री : बहुत बार एक प्रकार का गुनाह हुआ इसलिए फिर गुनहगार हो जाता है। जो गुनाह कभी ही था, वह फिर बार-बार करने लगता है। बार-बार ऐसी प्रवृत्ति में पड़ जाता है। हम वह रास्ता बताते हैं कि भाई, इसे मिटा देना साबुन से तो फिर ज़्यादा नहीं गिरेगा। ज़्यादा आकर्षण होना बंद हो जाता है न!

यह सब ऐसा सिखाना पड़ता है क्योंकि ये उल्टा ही मान बैठे हैं। ये तो ऐसा ही समझते हैं कि यह ऊपर से दिखाई देता है वैसा ही माल भीतर होगा न!

इन्डियन संस्कार उच्च प्रकार के

प्रश्नकर्ता : इस देश में (अमेरिका में) अब जात-पात जैसा कुछ नहीं रहा, तो वहाँ क्या करना चाहिए?

दादाश्री : अमेरिका में जात-पात की ज़रूरत ही क्या है हमें? अब ये इन्डियन तो हो न आप और इन्डियन में भाषा तो अपनी गुजराती है तो हम सभी एक ही हैं न! भाषा आमने-सामने बोलते हों और भाषा फीट होती हो, तो जात-पात की ज़रूरत क्या है अब? जात-पात तो सब अब, यहाँ उसके फाउन्डेशन निकाल देते हैं सारे। ये सब अब ऑल्ड बिल्डिंग हो गई हैं। अब नयी

डिज़ाइन की बिल्डिंग होनी चाहिए। इसलिए अपने आप ही वह नया बन जाता है। जात-पात की ज़रूरत नहीं है। उसकी ज़रूरत थी तब तक वह टिका था। अब वह ओल्ड हो गया इसलिए तुरंत गिर जाता है। आपको तो बच्चे गुजराती के साथ शादी करें ऐसा जितना हो सके उतना समझाते रहना है। गुजराती में किसी भी जाति का हो, तो भी गुजराती में शादी करना, ऐसा कहना। दूसरी जाति की आए, ओरिस्सा की आए तो आपकी बोली उसे नहीं आएगी और उसकी बोली आपको नहीं आएगी और यदि अमेरिकन से शादी करना चाहता हो तो उसके बजाय ओरिस्सावाली से करना, ऐसा कहना। अमेरिकन लानेवाला हो उसके बजाय अपनी इन्डियन अच्छी, चाहे जो भी हो, ओरिस्सा की हो तो भी अमेरिकन न आ जाए इतना देखना।

प्रश्नकर्ता : अपने हाथ में कहाँ है? अपने हाथ में नहीं है न, अमेरिकन आएगी या नहीं?

दादाश्री : हाथ में नहीं है, फिर भी ऐसे अनदेखी थोड़े ही कर सकते हैं? कहना तो पड़ेगा न, 'एय! उस अमेरिकन लड़की के साथ तू मत घूमना! अपना काम नहीं है।' ऐसे कहते रहें तब अपने आप ही असर होगा, इफेक्ट होगा। वर्ना वह समझेगा कि इसके साथ भी घूम सकते हैं और उसके साथ भी घूम सकते हैं। कहने में क्या हर्ज है? यदि मुहल्ला खराब हो, इन्डिया में खराब मुहल्ला होता है, तब वहाँ बोर्ड लगाते हैं, 'बिवेयर ऑफ थीव्स' ऐसा क्यों करते हैं? जिन्हें सँभलना हो वह सँभले। काम आते हैं या नहीं आते शब्द? क्यों समझ में नहीं आया तुझे?

प्रश्नकर्ता : आया न, बिल्कुल।

दादाश्री : अपने ये चार वर्ण हैं न, ये भी खंडहर स्थिति में ही हैं अभी, इसलिए खराब लगते हैं लोगों को। 'निकाल दो' कहा, 'उनके फाउन्डेशन सहित निकाल दो, फिर से आर.सी.सी. का फाउन्डेशन डाल दो।'

प्रश्नकर्ता : वह कैसे निकलेगा?

दादाश्री : फॉरेन में तो वह निकल गया अब। अब वह रहा ही नहीं है। ये आपके लड़कों से पूछकर देखो। 'किससे शादी करनी है तुझे?' 'अमेरिकन लेडी से?' मैंने पूछा। फिर थोड़ी देर बाद वह कहता है, 'नहीं, अमेरिकन नहीं?' तो किससे? तब कहता है, 'इन्डियन'। तब मैंने कहा, 'वह पंजाबी आती है वह?' 'नहीं, नहीं। पंजाबी नहीं, अपनी गुजराती होनी चाहिए।' मैंने कहा, 'ब्राह्मण-बनिया?' तो 'वह कोई भी चलेगी' कहता है। हाँ, एडजस्टेबल होते हैं। ब्राह्मण हो तो भी एडजस्टेबल, बनिया हो तो भी, पटेल हो तो भी एडजस्टेबल। तेली हो तो भी, बनिया-तेली होते हैं वे भी एडजस्टेबल। उसे समझा दिया, ताकि वह गलती न करे।

गोरी अमेरिकन लेडी पसंद नहीं आएगी तुझे! गोरी बगुले के पंख जैसी! ये अपनी स्त्रियाँ तो चाइना सिल्क जैसी दिखाई देती हैं।

प्रश्नकर्ता : दादा, कहाँ से सीख लाए चाइना सिल्क?

दादाश्री : वे चाइना सिल्क जैसी ही दिखाई देती हैं न! लेकिन अच्छी, पवित्र, बहुत पवित्र, स्त्री जाति है लेकिन पवित्र है बहुत क्योंकि इन्डियन संस्कार बहुत उच्च प्रकार के हैं न! रात भर पति से झगड़ा किया हो, पर बाहर कोई उसके पति की बात करे तो उसे खराब लगता है।

प्रश्नकर्ता : दरवाज़ा बंद कर देती है फटाफट।

दादाश्री : हाँ। 'दरवाज़ा बंद कर दो, फिर लड़ो' कहेगी। जबकि वहाँ तो मॅरि की पति के साथ लड़ाई हुई हो, वह बाहरवाले को पता चल

जाए तो मॅरि कहेगी, 'यह पति.. यस, यस आइ विल फायर।' और यह (इन्डियन) फायर-वायर नहीं करती बेचारी।

गोरे के बजाय थोड़े सांवले की कीमत है, एक बार गेहूँ लेने जा रहा था। तब एक व्यक्ति कहता है, 'मेरे यहाँ ये गेहूँ हैं', दूसरा कहता है, 'मेरे यहाँ ये।' मैं छोटा था तब मैंने कहा, 'ये गेहूँ तो काले हैं'। तब कहता है, 'ये भालिया हैं, बहुत मीठे होते हैं'। अरे, काले मीठे होते हैं क्या? तब कहता है, 'हाँ, काले ही मीठे होते हैं।' तब कौन से लेने चाहिए हमें?

प्रश्नकर्ता : मीठेवाले?

दादाश्री : ऐसा है यह सारा जगत्। 'द वर्ल्ड इज़ द पज़ल इटसेल्फ।' तो लोग मान बैठे हैं। खरबूजे (चिभड़ा), तो सभी प्रकार के, ये (फॉरेनवाली), सभी श्वेत दिखती हैं न? या गोरी दिखती हैं?

प्रश्नकर्ता : श्वेत दिखती हैं।

दादाश्री : हाँ, गोरी नहीं होती, श्वेत होती हैं। गोरी तो हिन्दुस्तान की स्त्रियाँ होती हैं। उन्हें गोरी कहते हैं, गौर रंग, श्वेत नहीं। श्वेत तो ये सभी, सभी खरबूजे होते हैं न?

अब मोक्ष में जाना है न? अब खोजना नहीं है न कुछ? आपको यदि यहाँ आना हो तो यहाँ फँसनेवाली जगह है, आपको फँसना हो तो फँस जाना।

खानदान जाति में, नहीं होता दहेज

प्रश्नकर्ता : दादा, (ये कुछ जाति में) पुरुष को जब लड़की देते हैं तब वे वह माँगते हैं न, पैसे माँगते हैं या कुछ (दहेज) माँगते हैं, तो पुरुष ऐसा क्यों माँगते हैं, लड़केवाले?

दादाश्री : ऐसा है न, कि अपने यहाँ पर तो कई बार कुछ चीज़ों के भाव बहुत बढ़ जाते हैं, सब्ज़ी के। दिवाली पर एक रुपये किलो मिलती थी और गर्मी में आठ रुपये किलो मिले ऐसा होता है, ऐसा हो जाता है। तो हम कहें कि भाई, आठ रुपये किलो भाव क्यों रखा है, एक रुपए के बजाय? तो वह क्या कहेगा?

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, तो फिर वह तो कोमोडिटी, व्यापार की चीज़ हो गई न वह तो?

दादाश्री : वह व्यापार ही हो गया न! वह व्यापार ही है सारा! नहीं देते, उसमें भी व्यापार है। कोई कितना भी सोना दे, पाँच तोला तो पाँच तोला। सारा व्यापार ही है यह। शादी भी व्यापार है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, लेकिन दादा, अभी अपने हिन्दुस्तान में जोर दे देकर कहते हैं कि शादी वह एक संस्कार है।

दादाश्री : संस्कार रूप रहा ही नहीं है न! अभी तो व्यापार रूप हुआ है न, है संस्कार मूलतः। लेकिन वह संस्कार रूप कहाँ रहा है! अभी तो तय किया हो कि भाई, पाँच तोला सोना देना तो पाँच तोला सोना वह न दे तो किच-किच चलती है। इसे संस्कार नहीं कहेंगे।

हमारे वहाँ एक व्यक्ति को दहेज देकर ले गए थे, छोटे गाँववाले को। बहुत दहेज देकर ले गए। वह माल, अच्छी लकड़ी मानी जाती थी। लकड़ी-लकड़ी में फर्क नहीं होता? सागवान की और वह जंगली और सब लकड़ी होती है न! इसलिए सागवान ले आते हैं फिर भारी कीमत चुकाकर!

फिर तो वे पहली बार बहु को वापस मायके नहीं आने दे रहे थे। फिर अब रुपए लेने थे। पहली बार बहु मायके आई न तो फिर से दहेज का चौथा भाग माँग रहे थे, वन फोर्थ। अब दस हज़ार रुपये दिए हो उस समय और फिर से ढाई हज़ार कैसे दें वह बेचारा? फिर वह जब लेने आया न तो

बहु को नहीं भेजा कि रुपये दोगे तो भेजूँगा, वर्ना नहीं। वह पिता भी होशियार था। वह फिर कहता है, 'मैं आपको थोड़े समय बाद रुपये भिजवा दूँगा, लेकिन अभी इसे भेज दो।' फिर उसे मायके ले आए और वापस बिदा कर दिया। उसके बाद फिर से जब भेजने की बारी आई दूसरी बार, तब कहते हैं कि 'पहली बार के ढाई हज़ार और दूसरी बार के बारह सौ देकर जाओ। पहली बार के नहीं दिए है।' तब वह पिता आकर क्या कहता है, उसकी बेटी के ससुर से, अकेले में कि 'आप बड़े लोग प्रतिष्ठित, इज्जतदार समझकर मैंने आपको अपना समधी बनाया। मेरी परिस्थिति नहीं है।' तब वे समधी क्या कहते हैं, 'तो यहाँ शादी क्यों की? यहाँ पर तो आना ही नहीं चाहिए!' अरे, लेकिन आया तो आया पर अब क्या? वह पिता भी होशियार था इसलिए वह समधी से कहता है, 'जरा कान में मुझे एक बात करनी है, सुनोगे? 'मेरी इस बेटी की शादी मुझे कहीं और करनी पड़ेगी अब।' कहता है, 'मैं डायवोर्स करवा दूँगा।' तो वह समधी कहता है, 'तू अब मेरे यहाँ आना ही मत। अब यह तेरी बेटी तेरे घर भेजूँगा भी नहीं और मुझे तेरे रुपये भी नहीं चाहिए।' उसके बाद उस बेटी को दुःख नहीं दिया। क्योंकि यों तो खानदान क्वॉलिटी!

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, वह तो बहुत हिम्मतवाला कहा जाएगा।

दादाश्री : कौन?

प्रश्नकर्ता : बेटी का पिता।

दादाश्री : हाँ, वह हिम्मतवाला नहीं, अक्लवाला। हिम्मतवाले तो बहुत होते हैं। वे तो लकड़ी दिखाते हैं, हथियार दिखाते हैं लेकिन यह तो अक्लवाला, वह समझता था कि ये सभी खानदानी हैं, क्या करेंगे? डायवोर्स का नाम लिया कि तुरंत चुप हो गए। वह तो फिर लोग ऐसा सब करते हैं। बाकी दहेज देते हैं, वह तो उसकी लकड़ी देखकर देते हैं, भाई। यों ही वेल्यूएशन (कीमत) नहीं देते।

प्रश्नकर्ता : ऐसा कहते हैं, अपने पाटीदार समाज में दहेज का रिवाज है और यदि दहेज न दें या तो कुछ कम-ज़्यादा हो जाए तो फिर बेटी को ससुराल में दुःख देते हैं। तो कहते हैं, यह रिवाज़ गलत है, यह नहीं होना चाहिए!

दादाश्री : किसी को दुःख देना वे रिवाज गलत हैं। जहाँ किसी को दुःख दिया जाता है, वे सारे ही रिवाज गलत हैं।

प्रश्नकर्ता : ये रिवाज निकाल देने के लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : सभी को इकट्ठे होना चाहिए। कुछ लोग ऐसा कहेंगे, हमें किसी भी तरह दहेज देकर भी अच्छे (घराने) में करना है। तो कुछ कहेंगे, नहीं, हमें ऐसा नहीं करना है। सभी को एकमत होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : कितने ही सालों से किसी को यह स्वीकार नहीं होता इसलिए बीच में किसी 'ज्ञानी पुरुष' की ज़रूरत है। सभी मिलकर ऐसा तय नहीं करते।

दादाश्री : वे तो मार खाकर तय करेंगे। मार खाकर सीधे होकर तय करेंगे सभी।

प्रश्नकर्ता : दादा, आप भी छह गाँव के हैं, इसलिए इसका कुछ हल ला सकें आपकी हाजिरी में, तो अच्छा।

दादाश्री : हम तो इतना कहेंगे, यह चीज़ गलत है। किसी को दुःख दिया जाता है। जहाँ पैसे की बात हो वह सारी बात ही गलत है। लेकिन पाटीदार क्षत्रिय होने से वे दहेज लेंगे।

वह सही है, आप कहते हैं वैसा, ये सारे रीति-रिवाज निकाल देने चाहिए!

प्रश्नकर्ता : नहीं, लेकिन वह तो चलेगा नहीं और इसका एन्ड नहीं हैं।

दादाश्री : नहीं, ये आप बनियों ने यह रीति-रिवाज निकाल दिया है न, तो अच्छा चल रहा है। आपकी गाड़ी अच्छी चल रही है! अच्छी चल रही है परंतु हमारी तो मूल अहंकारी आदत है न! मूल क्षत्रिय हैं न!

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, हम तो इसे एक्सेप्ट ही नहीं करते। दहेज एक्सेप्ट ही नहीं करना है।

दादाश्री : बहुत ही अच्छा। आपका मैंने सब देखा है न! मैंने हर एक जाति के बनियों का-जैनों का देखा है, सबका अच्छा है। सिर्फ यह हमारा ही खराब लगा मुझे।

प्रश्नकर्ता : और ऐसा जो कोई कहे न, तो मना ही कर देना है, कि भाई, वह नहीं चलेगा। यह शर्त हो तो आओ।

दादाश्री : यह तो बिल्कुल सौदेबाजी हो गई है, सौदेबाजी! प्रेम कहाँ रहा और सौदेबाजी ही हो गई! एक ओर रुपये रखो और एक ओर हमारा लड़का, तभी शादी होगी ऐसा कहते थे। एक तराजू में रुपये रखने पड़ते थे, तराजू के तौल से तौलते थे।

प्रश्नकर्ता : दादा, वह तो वहीं से झगड़ा शुरू होता है। पचहत्तर प्रतिशत झगड़ा तो वहीं से शुरू होता है।

दादाश्री : झगड़े ही शुरू होते हैं, बस।

प्रश्नकर्ता : हाँ, शादी के दिन से ही झगड़े शुरू होते हैं।

दादाश्री : बस, बस। वही क्लेश है इस संसार में। लेकिन क्या हो सकता है! इसलिए कबीर कहते थे न कि इतने बड़े दिल्ही में हमें कोई मनुष्य ही नहीं दिखता। क्या दिल्ही में मनुष्य नहीं थे? तो कहते हैं, 'मानस खोजत मैं फिरा।' मनुष्य खोजने मैं निकला, कि 'मानस का बड़ा सुकाल', आमने-सामने टकराते थे, कहते हैं। सुकाल, दुष्काल नहीं! आमने-सामने टकराते थे, कितने सारे लोग! परंतु 'जाको देखी दिल ठरे ताका पड्या दुकाल'! जिसे देखकर अपने दिल को ठंडक मिले, उसका अकाल है। यह सब भटक-भटक किया उसका अर्थ ही नहीं।

कुल और जाति दोनों देखें सिलेक्शन में

जाति-कुल का मिश्रण होता है तब संस्कार आते हैं। सिर्फ जाति हो और कुल नहीं हो तब भी संस्कार नहीं होते। सिर्फ कुल हो, जाति नहीं हो तब भी संस्कार नहीं होते। जाति और कुल दोनों का मिश्रण, एक्ज़ेक्टनेस हो तभी संस्कारी लोग जन्म लेते हैं।

प्रश्नकर्ता : जाति यानी ये वर्ण न?

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं। मैं समझाता हूँ। सिर्फ 'कुलवान', 'कुलवान' कहें पर जाति न देखें तो मार पड़ जाती है।

अब, फादर पक्ष को 'कुल' कहा और माँ के पक्ष को 'जाति' कहा। दोनों अच्छे पक्षों का मेल हुआ हो तो बात करना, वर्ना मज़ा नहीं। जाति नहीं होती तो कुल बिगड़ जाता है। जाति नहीं होती तब वह चोर होता है, आवारा होता है, बदमाश होता है। पत्ते खेलता है और कुछ करता है, दारू पीता है।

कुलवाला तो नोबल होता है और जाति तो, हम जब बाज़ार में घोड़ी लेने जाते हैं न, लोग घोड़ी खरीदने जाते थे, तब मैं छोटा था, तो पूछता था। 'आप क्या देखते हैं इस घोड़ी में?' तब वे कहते थे, 'जातिवान है या नहीं वह'। अरे, जातिवान! और घोड़े को भी जातिवान का बच्चा है या नहीं यह देखते थे! घोड़ी जातिवान कही जाती

है। घोड़ा जातिवान नहीं होता। तो जातिवान घोड़ी होती है न, इसलिए लोग पास करके ले जाते हैं।

इस तरह ये कुल और जाति, दोनों का मिश्रण हो जाए तब। सिर्फ कुल लाकर क्या करना है? कोयला निकलेगा। सिर्फ जाति देखकर लाओ तो भी बरकत नहीं आती। अरे, वे कंजूस होते हैं!

प्रश्नकर्ता : इसलिए अपने में माँ का मायका भी देखते थे न?

दादाश्री : इसलिए उस जाति की भी जाति देखते थे अपने लोग। लेकिन इतना सब देखने की ज़रूरत नहीं है। इस स्त्री (माँ) की जाति कैसी है? माँ का जन्म जिस कुल में हुआ उसकी जाति कैसी है? इसलिए उसकी जाति पर से तुरंत पता चल जाता है और पिता जिस कुल में जन्म लेते हैं, उनका कुल कैसा है, वह देख लेते हैं। कुल के गुण हैं अलग और जाति के गुण अलग हैं। दोनों का मिश्रण हो जाए तब संस्कारी पुरुष (बालक) वहाँ जन्म लेता है। यों ही तो हो ही नहीं सकता न अपना? यों ही तो ये बाज़रे के भुट्टे इतने बड़े आते होंगे? या तो किसी विशेष प्रकार का खाद डाला हो तब आते हैं, वह अलग चीज़ है। और यों ही जमीन में अपने आप आते हैं, उगते हैं, क्योंकि यदि बाज़रे के दाने को हम पिता का पक्ष मानेंगे और धरती को माँ पक्ष मानेंगे, तो वह सूझ पड़ेगी हमें। पिता अच्छा हो और धरती खराब हो तो क्या करोगे? धरती अच्छी है और पिता ऐसा हो तो? इसलिए माँ पक्ष को जाति कहा। समझना चाहिए न? कुलवान! अरे, चोरी करेगा, जेब काट लेगा। बाकी सब देखना। नहीं देखना पड़ेगा सब? क्या कहते हो?

प्रश्नकर्ता : दोनों देखना पड़ेगा।

दादाश्री : लेकिन आखिर में व्यवस्थित का हिसाब! फिर वे कुंडली देखनेवाले की बेटी विधवा होती है, तो वह दुनिया भी चलती ही है न! अपनी बेटी विधवा न हो इसलिए उससे कुंडली देखने को कहते हैं! तब मुझे लोग कहते हैं, 'छोड़ देना चाहिए?' मैंने कहा, 'भाई, छोड़ मत देना। यह निमित्त है।'

प्रश्नकर्ता : कहावत है न कि वैद्य के मरते नहीं और ज्योतिषी के विधवा-विधुर होते नहीं।

दादाश्री : हाँ, लेकिन इन शब्दों का उपयोग करने जैसा नहीं है क्योंकि निमित्त छूट जाता है। निमित्त चाहिए। निमित्त की ज़रूरत है। डॉक्टर क्या नहीं मरते? देखो न, सभी पेशन्ट मुझे कह रहे थे। कहते थे, हम यहाँ पर डॉक्टर के पेशन्ट हैं और डॉक्टर चले गए, कुछ कहे-करे बिना। वे कहने के लिए भी नहीं रहे। उनसे भी बूढ़ा था एक पेशन्ट, वह कहता है, 'मैं तो उनसे बूढ़ा था, लेकिन मुझे छोड़कर चले गए!' 'अरे, उनके फादर को छोड़कर चले गए, उसमें तेरा क्या हिसाब फिर?' कहा। यह तो ऐसा है! वे डॉक्टर भी निमित्त तो हैं ही न! निमित्त मात्र! आप जिनके निमित्त है उस निमित्त को मैं निमित्त न बनाऊँ तो मेरी भूल है। मैं जिसमें निमित्त होऊँ उसे आप मानो नहीं, तो आपकी भूल है, नहीं है?

प्रश्नकर्ता : ठीक है।

दादाश्री : अत: माता जातिवान होनी चाहिए और पिता कुलवान होना चाहिए। उनकी संतान बहुत उमदा होगी। जाति में विपरीत गुण नहीं होते और पिता में कुलवान प्रजा के गुण होते हैं। कुल के वैभव के साथ, दूसरों के लिए घिस जाते हैं, लोगों के लिए घिस जाते हैं। बहुत ऊँचे कुलवान कौन? जो दोनों ओर से नुकसान सहन करें। आते समय भी खर्च करें और जाते समय भी खर्च करें। वर्ना संसार के लोग कैसे कुलवान हैं? एक तरफ खुद नुकसान करते हैं। लेते समय पूरा लेते हैं लेकिन

देते समय थोड़ा ज़्यादा देते हैं, तोलाभर ज़्यादा देते हैं। लोग चालीस तोला देते हैं, लेकिन खुद इकतालीस तोला देता है। जबकि डबल कुलवान कौन है? खुद उनतालीस तोला लेता है। एक तोला वहाँ कम लेता है और देते समय एक तोला ज़्यादा देता है, वह डबल कुलवान है। दोनों तरफ से नुकसान उठाते हैं, तो वहाँ पर कम क्यों लेते हैं? वह पहले ही दुःखी है, जाने दो न! उसका दुःख दूर करने के लिए! यहाँ भी अच्छी भावना, वहाँ भी अच्छी भावना। मैं ऐसे लोगों को देखता था तब क्या कहता था, ये द्वापरयुगी आए।

मैंने कहा, ये लड़के द्वापरयुगी हैं। द्वापर में ऐसा था। अभी इस कलियुग में कहाँ से होगा? कलियुग में तो दोनों तरफ से, कोई तो लेते समय भी हमें बेवकूफ बनाता है और देते समय भी।

अब उच्च कुल हो और कुल का अहंकार करे, तो दूसरी बार उसे निम्न कुल में जन्म मिलता है और नम्रता रखे तो उच्च कुल में जाता है। बस यह अपनी ही शिक्षा है, अपनी ही फसल है। वे गुण प्राप्त नहीं करने पड़ते, सहज ही प्राप्त हो जाते हैं। वहाँ उच्च कुल में जन्म होने पर, हमें जन्म से ही सभी अच्छे संस्कार प्राप्त होते हैं।

प्रश्नकर्ता : यानी ये कुल जो है वह उच्च मिला या निम्न मिला, उसका कुछ हर्ष या खेद नहीं रखना चाहिए न?

दादाश्री : हाँ, वह सही है। हर्ष नहीं होना चाहिए यानी अहंकार नहीं। उसका कैफ नहीं रखना चाहिए। निम्न मिला हो तो इन्फिरियारिटी कॉम्प्लेक्स (लघुता ग्रंथि) नहीं रखना चाहिए, प्लस-माइनस करते रहना चाहिए।

लोकमान्य हो वह उच्च कुल, और क्या! उसमें कुल में और कोई फर्क नहीं है। बड़े सेठ का बेटा हो और सेठ का चचेरा हो, गरीब हो, उसका बेटा हो लेकिन सेठ का कुल ज़्यादा अच्छा। संसार में तो सेठ का कुल उच्च माना जाता है। और वह (चचेरा) गरीब है उसके पास पैसे-वैसे कम और बाकी सब कम, इसलिए ऐसा हल्का दिखाई देता है। लेकिन जब गुण में वह सेठ का बेटा उल्टा निकले, तो वह हल्का दिखाई देता है और गरीब का फिर उच्च दिखाई देता है। और सिर्फ कुल नहीं चलता, कुलवान के लड़के चोरियाँ करते हैं, दारू पीते हैं, माँसाहार करते हैं, सब कुछ ही करते हैं। इसलिए हमारे बुज़ुर्गों ने खोज़बीन की थी, कि सिर्फ कुल मत देखना, जाति भी देखना।

ये सब व्यवहार में काम की बातें हैं, ये कोई ज्ञान की बातें नहीं हैं। लेकिन व्यवहार में इनकी ज़रूरत है न!

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, आपने सही कहा है, व्यवहार में ज्ञान की बातें भी ज्ञान की चोटी तक पहुँचने तक हम व्यवहार में हैं, तो व्यवहार में ये बातें भी काम में आती हैं न!

दादाश्री : हाँ, काम में आती हैं न! व्यवहार भी अच्छा चलता है। 'ज्ञानी पुरुष' में विशेषता होती है। 'ज्ञानी पुरुष' के पास बोधकला और ज्ञानकला दोनों कलाएँ होती हैं। यह बोधकला सूझ से उत्पन्न हुई है और ज्ञानकला ज्ञान से उत्पन्न हुई है इसलिए वहाँ (ज्ञानी पुरुष के पास) आपका निराकरण आ जाता है। किसी दिन ऐसी बातचीत की हो तो उसमें क्या हर्ज है? आपको क्या नुकसान होना है? 'दादा' भी बैठे होते हैं, उनकी कोई फीस नहीं होती। फीस हो तो हर्ज होगा!

अब सब हो गया मिलावटी

एक पटेल हमारे पहचानवाले थे, रिशतेदार भी थे। तो बयालीस के साल में हमारा काम पड़ा, उस समय हमें बुलाया कि 'ज़रा आना न, हमें इतना काम है।' इसलिए मैं और उनके मामा, दोनों

वहाँ गए। तब कहते हैं, 'मुंबई जा पाओगे आप?' मैंने कहा, 'हाँ, जाएँगे।' तब कहते हैं, 'घर पर खबर भिजवा दो'। तब मैंने कहा, 'भिजवाते हैं'। फिर कहते हैं, 'लेकिन भोजन करके जाना, यहाँ भोजन करना पड़ेगा'। तब मैंने कहा, 'यहाँ भोजन करेंगे'। पटेल होकर उन्होंने शादी कहाँ की थी? नागर ब्राह्मण के वहाँ। बड़े आदमी की, दीवान की बेटी। वे खुद कहते हैं, 'आपको यह काम करना पड़ेगा।' मैंने कहा, 'काम क्या है वह बताओ।' तब कहते हैं, 'हज़ार की नोटों को कैन्सल किया है। हमारे पास जो हज़ार की नोटें हैं न, उन्हें कैसे भी करके खर्च कर देना है, आखिर में बेच देना है, थोड़े-थोड़े कम भाव में।' मैंने कहा, 'ले जाएँगे'। तो हम दोनों ने कमर में बाँध लिए। करीब दो लाख थे उनको बाँध लिया। और फिर वे कहते हैं, 'नहीं, भोजन करके जाना।' तो भोजन करने बैठे। तब कहते हैं, 'कंसार तो आज खाना पड़ेगा, शगुन का।' उस ब्राह्मणी ने शगुन किया था। उसने इतना-इतना कंसार दिया। तब तक हमें परेशानी नहीं हुई। फिर शक्कर देकर गई। तब उसके मामा ने कहा कि 'घी लेकर आओ'। वह घी लेकर आई और एक बूँद डाला। अरे, कंसार में यह गिला भी नहीं होना चाहिए? क्या पानी में भिगोएँ? क्या पानी में भिगोकर खाएँ? उसने एक बूँद डाला। फिर उसके मामा तो दोबारा बोले ही नहीं। फिर अंदर ले गई वापस, घी। उसके बाद 'और ज़्यादा दूँ?' कहती है, फिर ज़रा सा। उसने वापस फिर बूँद भर डाला। वह घी का बर्तन यों हिलाती, उसे 70 डिग्री तक झुकाती थी। घी का बर्तन यों 70 डिग्री तक झुकाती थी। एक बूँद भी गिरने नहीं देती थी। अब कंसार पूरी रात चूभेगा, कहते हैं। यदि पड़ा रहने दें (थाली में रहने दें) तो उसे खराब लगेगा। था थोड़ा सा, लेकिन ऐसा! तब क्या पानी में भिगोएँ?

फिर उसके मामा कहते हैं, 'यह मेरा भांजा पागल है, तो इस ब्राह्मीन को घर लाया!' उसका कारण यह है कि उसे एडजस्टमेन्ट लेना नहीं आता। उसे एडजस्टमेन्ट लेना आना चाहिए। तुरंत ही अपने रिवाज अनुसार समझा देना जाहिए, कि 'जब बाहर के लोग आएँ न, उनके पास आपको घी का एक बर्तन रख देना है। आप दे तो नहीं पाओगी, कभी भी नहीं दे पाओगी। इसलिए आपको घी का बर्तन रख देना है, आपको ठीक लगे तो। बाकी दे तो नहीं पाओगी'!

अभी तो सब मिलावटी हो गया है न! उन दिनों तो था ही ऐसा। अभी तो ऐसी घी-वी की ऐसी कोई झंझट ही नहीं है न! उन दिनों पुराने संस्कार, वे नागर ब्राह्मण थे न, वे एक बूँद ही देते थे। पाटीदारों को ज़रा ज़्यादा चाहिए, अरे, घी-वी भी लथपथ! जबकि वे नागर के तो बहुत कंजूस लोग! कई लोग तो दोपहर में खाना बनाते हैं न, तो शाम को एक-एक रोटी और ज़रा से चावल बचा हो उसका उपयोग करते थे, दूसरा नहीं बनाते थे। मैंने ऐसे कई नागर देखे थे। मेरे सर्कल में, ऐसे दो फ्रेन्ड थे, वे एक ही बार खाना बनाते थे और शाम को वही बचा-खुचा खा लेते थे। वह भी शाम को यों दो-तीन व्यक्ति के लिए ही, दो लोग वे और बेटा-बेटी, उनके लिए ही, उतना ही बनाते थे और बाहर से थोड़ा सा खमण-वमण ले आते थे। वे बहुत इकोनोमीवाले और बहुत कंजूस थे, ठीक से खर्च नहीं करते थे! बहुत कंजूस!

प्रश्नकर्ता : आपकी बात सही है, हमें अनुभव हुआ है।

दादाश्री : यह हमने, वह स्त्री जो कम घी परोसती थी उसकी बात की, उसका हमें भी प्रतिक्रमण करना पड़ता है। किस आधार पर वह कम देती है, वह सारा ज्ञान हाज़िर होता है और उसका प्रतिक्रमण करते हैं। अज्ञान से भाव हुए हों, उन्हें ज्ञान से छानना पड़ता है। एक-एक शब्द: साफ करना पड़ता है तभी पूरा काम होता है!

लेकिन उस समय पूरी रात गाड़ी में गालियाँ दी थी। 'अरे भांजे, तूने ये किससे शादी की!' कहते थे। इसलिए सभी को अपनी-अपनी जातिवाली पुसाती है वह तो। संस्कार समान मिलना मुश्किल है। इसलिए हो सके वहाँ तक हमें नोबल जातिवाली से, नोबल जाति में शादी करनी चाहिए। सबकी अपनी-अपनी जाति का हिसाब संस्कार अनुसार चलता है।

लेकिन कलियुग में सब छिन्न-भिन्न हो गया है। पहले तो वैष्णव के यहाँ वैष्णव ही जन्म लेते थे। अभी ऐसा नहीं है। अभी तो वैष्णव के यहाँ जैन का जन्म होता है, जैन के वहाँ वैष्णव का जन्म होता है, ऐसा सब है। जैसे ये लड़कियाँ भागती हैं न वैसे (भागकर दूसरी जाति में शादी करती है)।

प्रश्नकर्ता : यह पटेल और ब्राह्मण की ज़ोडी ऐसी ही बनी न?

दादाश्री : हाँ। पहले तो उस ब्राह्मण को जाति बाहर कर देते थे। अभी जाति बाहर करना मुमकिन नहीं है, किसी को भी। क्योंकि जाति बाहर करनेवाले की बेटी ही चली गई होती है वहाँ! इसलिए मेरी भी चुप तेरी भी चुप! यों करते-करते टूट गया सब।

इन्टरकास्ट (अंतरजातिय) मेरेज़ करने में हर्ज़ नहीं है अब। पहले करने में थोड़ा हर्ज़ था।

जर्मन लेडी से शादी की उस पर चिढ़ थी

प्रश्नकर्ता : दादा, आपके टाइम में समाज कितना अधिक संकुचित विचारवाला था और आपको ज्ञान तो हुआ नहीं था, तो किस तरह आप ऐसे फ्लेक्सिबल और एडजस्टेबल विचार कर पाते थे?

दादाश्री : हाँ, मुझे ज्ञान नहीं हुआ था तब की एक बात बताता हूँ। पैतालिस साल पहले की बात है। एक हमारे चाचा के बेटे हैं, उनके साले ने फॉरेन की लेडी से शादी की थी, जर्मन ज्यू (यहूदी) से शादी की थी। नडीयाद के पटेल, काकरखाड के थे, वे सांताक्रूज़ में रहते थे।

फिर एक दिन वह भतीजा मुझसे ऐसा कहने लगा, कि 'चाचा, आप मेरे मामा के वहाँ चलो न, एक बार। एक बार तो आप पधारो न।' उन दिनों ज्ञान-वान नहीं था, लेकिन चाचा के नाते। तब मेरे मन में तो चिढ़ थी कि 'इस व्यक्ति ने फॉरेनवाली लेडी से शादी की है, वहाँ जाकर हमें क्या करना है?' भ्रष्टाचार, खाने में भ्रष्टाचार, सभी तरह से। इसलिए मेरे मन में चिढ़ बनी रही। मुझे उस समय चिढ़ थी, उस जमाने में, कि इसने फॉरेन लेडी से शादी की उसमें अपना क्या रहा? संस्कार क्या रहे फिर? इसलिए मुझे उससे नफरत थी। फिर वह भतीजा बुलाने आया, 'चाचा, मेरे मामा के वहाँ चलो, बुला रहे हैं।' तब मैंने कहा, 'भाई, वहाँ तो नहीं आ सकता। तेरी मामी ऐसी और सब कुछ ऐसा, इसलिए मुझे रास नहीं आएगा!' उन दिनों ज्ञान नहीं हुआ था। अभी तो सभी जगह जाते हैं। अभी तो माँसाहार मेरे पास (सामने) करता हो तो भी हर्ज़ नहीं जबकि उन दिनों हमें ये सब रास नहीं आता था। लेकिन फिर मैं तो गया, बहुत पीछे पड़ा इसलिए। गया तो उसके मामा खुश हो गए, कि 'आप मेरे यहाँ आए, मुझे बहुत आनंद हुआ', कहते हैं। 'मेरे यहाँ देखो, ये रसोईघर दोनों अलग हैं। यह वेजिटेरियन और यह नॉन वेजिटेरियन, दोनों अलग हैं और आज आप भोजन करके जाओ', कहते हैं। मैंने कहा, 'नहीं, मैं भोजन तो नहीं करूँगा।' क्योंकि मन में चिढ़ थी! अब, मन में वह जो चिढ़ थी उसे कैसे निकालते, उन दिनों ज्ञान नहीं था इसलिए? फिर भी सामनेवाले को चिढ़ का पता न चले इसलिए हेन्डल मारते रहें। चिढ़ का पता चल जाए तो खराब दिखता न!

अनुभव बढ़ने पर नोबिलिटी आती जाए

लेकिन फिर मैंने चाय तो पी ली। फिर मुझे कहते हैं, 'नहीं, आज के दिन आप भोजन करो न, यह वेजिटेरियन भी है और आपको परेशानी नहीं होगी'। उसके मन में ऐसी इच्छा थी। फिर थोड़ी देर बाद मैं बाथरूम में गया। तब मेरा निकलना और उस लेडी का बाथरूम में जाना हुआ। तो मैं उस लेडी को देखकर चौंक गया! उस लेडी की पर्सनालिटी देखकर! एकदम से यह अचानक देखा न, मैंने उस लेडी को देखा नहीं था! और शरीर भी ऐसा मज़बूत! उसकी आँखें बड़ी थी। उसने मुझे कुछ नहीं किया। उसने बेचारी ने तो विनय किया था लेकिन मुझे खुद को घबराहट हो गई।

उसके बाद मैंने भोजन किया ज़रूर, परंतु मेरे मन में उस चौंक जाने का ज्ञान बना रहा। उस ज्ञान ने मुझे आगे क्या समझाया, कि 'यदि आप इस लेडी को देखते ही सिर्फ पाँच मिनिट में ही यों चौंक गए, तो यह व्यक्ति हमेशा कैसे इसे संभालता होगा?' इसलिए मुझे बल्कि उसके तरफ मान उत्पन्न हुआ। मैं चौंक गया इसलिए मुझे मान उत्पन्न हुआ।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वह एडजस्ट हो गए तो मान तो होगा ही न?

दादाश्री : मुझे मान हुआ न, इसलिए फिर मैंने अच्छी तरह से भोजन किया, उसके वहाँ। उसके बाद मैंने कहा, 'अब, चाय पीकर जाऊँगा।' ताकि उनके प्रति मेरा डर निकल जाए। मेरे मन में जो रोग था उसे उस स्त्री ने निकाल दिया, कि फॉरेनवाले से शादी नहीं करनी चाहिए। अरे, उनसे शादी करना क्या आसान है? तू शादी करके देख! उनसे शादी करना वह आसान नहीं है!

प्रश्नकर्ता : दादा, लेकिन आपका डर निकल गया या नहीं, फॉरेनवाले के प्रति?

दादाश्री : मेरा डर तो.. मेरा खुद का स्वभाव कैसा है? चाहे जैसा भी हो न, तो पहले ज़रा सा डर बैठ ही जाता है। लेकिन यह अंदर का ज्ञान ऐसा है न, उससे तुरंत ही उड़ जाता है बाद में तो लेकिन बैठ गया था वह सही है न! उसे मैंने देखा इसलिए मुझे ऐसा लगा कि मैं डर गया इस स्त्री से। बाद में मैंने *नोंध* किया। मैंने सोचा, 'अरे, इस जर्मन यहूदी से शादी की, उस पर मुझे चिढ़ हो रही है और यह, दिन भर उसके साथ कैसे रहता होगा?' मुझे इन पाँच मिनटों में ही डर लगा, तो यदि मैंने शादी की होती तो मेरी क्या दशा होती?

प्रश्नकर्ता : दादा, आपको तो हीराबा कितने अच्छे मिलें, भोले-सरल!

दादाश्री : हाँ। लेकिन वह तो थी शेरनी जैसी, उससे मुझे भी डर लगा, तो यह कैसे निभाता होगा? यानी वह व्यक्ति कितना शक्तिशाली होगा? वह बड़ा, उतना वह शक्तिवाला कहा जाएगा! वह उस दिन मुझे शक्तिवाली लगा। इसलिए तब से मेरी चिढ़ चली गई। मेरे मन में जो गलत था, वह निकल गया। भीतर चिढ़ महसूस होती थी। बाद में मैंने कहा, 'नहीं, अब हर्ज़ नहीं है, मुझे अब पसंद आया।' मैं इतना अहंकारी गुणवाला, वह अहंकार न जाने कहाँ विलय हो गया! अहंकार विलय हो गया और सिर्फ पानी ही दिखाई दिया, सब जो नमक उसमें डाला था वह दिखाई ही नहीं दिया। यानी ऐसी है दुनिया! किसलिए उस पर चिढ़ रखें!

यह मैं जो तिरस्कार कर रहा हूँ, वह गलत है, यह मेरी भूल है। जैसे-जैसे अनुभव होता जाता है, वैसे-वैसे नोबिलिटी आती जाती है। मन को विशालता कब होती है? जब वह जगह, भयस्थान देखें तब विशालता होती है! यों ही विशाल नहीं हो सकता न! अनंत जन्मों से विशालता हुई है फिर भी वापस आवरण आ जाता है, तब फिर आवरण में एकाद ऐसा डर देखता है तो वापस वह निकल जाता है।

एक जाति में स्वभाव मिलते हैं

प्रश्नकर्ता : अपनी जाति में ही शादी करने के क्या लाभ हैं, यह ज़रा बताइए।

दादाश्री : अपनी कम्युनिटी की वाइफ हो न, तो अपने स्वभाव एक जैसे होते हैं। कंसार परोसा हो तो आपको घी ज़्यादा चाहिए। अब किसी ऐसी जाति की लड़की से शादी कर आया, तो वह ऐसे परोसेगी नहीं, ऐसा नीचा हाथ करके डालने में ही उसके हाथ दु:खेंगे। इसलिए उसके भिन्न स्वभाव के साथ सारा दिन टकराव होता रहेगा और ये अपनी जातिवाली के साथ ऐसा कुछ नहीं होगा। वह दूसरी तो भाषा बोलेगी न, तो वह भी बड़ी सावधानी के साथ बोलेगी और आपका दोष निकालेगी कि 'तुम्हें बोलना नहीं आता, ऐसे नाटक करेगी।' उसके बजाय अपनी अच्छी कि कुछ कहेगी तो नहीं, आपको डाँटेगी तो नहीं।

प्रश्नकर्ता : आप कहते हैं कि अपनी जाति की हो वहाँ झगड़ा नहीं होता, लेकिन अपनी जाति की हो, वहाँ पर भी झगड़ा होता है, इसकी क्या वजह है?

दादाश्री : झगड़ा होता है परंतु उसका समाधान हो जाता है। अब इसके साथ तो सारा दिन अच्छा लगता है जबकि दूसरी के साथ अच्छा नहीं लगेगा फिर, एकाध घंटा अच्छा लगेगा और फिर ऊब जाओगे। वह आए और ऊब जाओगे, वह आए और तुरंत ऊब जाओगे। अपनी जाति की हो तो पसंद आती है, वर्ना पसंद ही नहीं आएगी। ऊब जाओगे, भूतनी जैसी लगेगी। ये सब जो पछताए हैं, उनके उदाहरण बता रहा हूँ। ये सब, बहुत लोग फँस गए थे।

व्यवहार भी जाति में ही करे, वह धर्म

प्रश्नकर्ता : आपका क्या अभिप्राय है, इस इन्टरकास्ट शादी के बारे में? आपकी राय?

दादाश्री : हमारी राय नहीं होती। वह तो जहाँ उसका हिसाब होता है वहीं शादी होती है। लेकिन इसमें अभिप्राय देने की ज़रूरत ही क्या रही अब! जहाँ हिसाब होता है वहीं शादी होती है। इसलिए हमें उसमें कोई दु:ख नहीं होता। वह हमें गलत *नोंध* नहीं होता कि यह गलत किया है ऐसा। हिसाब होता है वहाँ जाकर ही शादी करते हैं, फिर उसका क्या करना है?

लेकिन खुल्ला नहीं कह सकते। खुल्ला तो उनको कहते हैं 'लड़कों, आपकी जाति में ही शादी करना'। फिर परिणाम आने पर डाँटते नहीं हैं। दूसरी जाति में शादी की हो तो भी नहीं डाँटते। हिसाब बिना होता ही नहीं है न! यह तो हम जानते हैं कि किस आधार पर होता है! वह नहीं करता बेचारा। वह कर्ता नहीं है, कर्ता अलग है। इसलिए हमें उसके प्रति वह नहीं रहता।

प्रश्नकर्ता : पश्चिम की स्त्री और हिन्दुस्तान का पुरुष शादी करें, एक-दूसरे की शादी हो जाए, अंतरजातिय विवाह हो जाए तो उसका फल क्या आता है?

दादाश्री : लेकिन वह तो व्यवस्थित है न! वह तो ऐसा हिसाब बंधा हुआ है, पूरण-गलन का वह।

प्रश्नकर्ता : दादा, लेकिन यह सही है कि उनका व्यवस्थित होता है उसके साथ ही शादी होती है? व्यवस्थित होता ही है शादी के लिए?

दादाश्री : सब कुछ व्यवस्थित ही है। यह जगत् ही व्यवस्थित है। लेकिन शादी से पहले व्यवस्थित नहीं कह सकते। तब तक आपको प्रयत्न करते रहना चाहिए कि 'नहीं, अरे... फॉरेनवाले से शादी नहीं करनी है, फॉरेनवाले से शादी नहीं करनी है', शादी न हो जाए तब तक, लेकिन उनकी मेरेज़ हो जाने के बाद आपको कहना है, कि भाई, आओ घर में'।

माता-पिता अपने हित में

बहन, तुझे शादी करना पसंद है क्या? कैसे लड़के से शादी करनी चाहिए?

प्रश्नकर्ता : एज्युकेटेड, कल्चर्ड फैमिली का लड़का होना चाहिए।

दादाश्री : किस तरह कल्चर्ड है, ऐसा समझ में आता है?

प्रश्नकर्ता : वह तो 'गेम्बल' (जुआ) है। 'लाईफ गेम्बल' ही है न! वही जुआ है!

दादाश्री : नहीं। लेकिन आप खरबूजा या पपैया लें, तो खरबूजावाला तो कहेगा, 'साहब, मीठा है'। तब कहते हैं, 'भाई, मुझे कैसे भरोसा होगा?' तो कहता है, 'मैं काटकर ज़रा सा टुकड़ा निकालकर दिखाता हूँ'। तो इसमें कोई टुकड़ा निकालकर दिखाता है क्या? टुकड़ा नहीं दिखाए, तो कैसे मानोगे कि अंदर से मीठा है!

प्रश्नकर्ता : हाँ... तो फिर किस तरह पता लगाएँ?

दादाश्री : तेरे मदर पर तुझे विश्वास है या फादर पर?

प्रश्नकर्ता : दोनों पर।

दादाश्री : तो फिर उन्हें सौंप दे न यह केस। वह एक भाई था, तो उसके फादर ने कहा, 'ये लड़की देखकर तू हाँ या ना कह दे।' तब कहता है, 'नहीं मुझे शादी नहीं करनी है।' उसे बहुत लड़कियाँ दिखाई। तो कहता है, 'मुझे नहीं करनी है'। इसलिए फिर उसके फादर, वे मुझसे कहते हैं, 'यह लड़का सुनता नहीं है। लड़की ही पसंद नहीं करता'। तब मैंने लड़के से कहा, 'वह सभी तरह से अच्छी होनी चाहिए, तू धोखा खाएगा भाई उसके बजाय अनुभवी को सौंप दे न! तू छोटा है इसलिए कुछ भी लेते समय धोखा खा सकता है। उसके बजाय तेरे फादर अनुभवी है, उन्हें सौंप दे न'! 'दादा, आप कहते हैं तो सौंप देता हूँ?' मैंने कहा, 'हमारी गेरेन्टी, ले तेरे सिर पर हाथ रखता हूँ।' और उसके फादर को वहाँ जाकर कहता है, 'आप पसंद करोगे, उस लड़की से मैं शादी करूँगा।' उसके फादर, वे मुझसे कहते हैं, 'आपने क्या किया दादा? वह ऐसा कह रहा है!' अरे, उसने शादी की! और सुखी होकर आज मुझसे कहता है, 'दादा, मेरे फादर को मैंने आपके कहने पर ही हाँ कहा था, तो मैं सुखी हो गया। अब मेरी वाइफ के बिना मुझे अच्छा नहीं लगता'।

हम तेरे अहित में होंगे क्या? किसी के अहित में नहीं होते। मेरी बात तुझे पसंद आई इसमें?

अपने एक महात्मा थे। उनका इकलौता लड़का था, मैंने कहा, 'अरे, तुझे शादी करनी है या नहीं?' तब कहता है, 'करूँगा दादाजी'। 'कैसी लड़की पसंद करेगा?' तो कहता है, 'आप कहो वैसी करूँगा'। अपने आप ही फिर कहने लगा, 'मेरी मम्मी तो पसंद करने में होशियार है'। उन लोगों ने आपस में डिसाइड कर लिया था, मम्मी जो पसंद करे वह, तो इस तरह होना चाहिए।

ये लड़कियाँ बेचारी भोली हैं, ऊपर से गोरी त्वचा दिखती हो, पूछती है, 'सिनेमा देखने का शौक है आपको?' तब वह कहे, 'हाँ' और हो गया।

यह तो मुझे तू अभी बता कि तुझे पसंद करना हो तो क्या प्रश्न पूछोगी?

प्रश्नकर्ता : आप शर्मिंदा कर रहे हैं उसे।

दादाश्री : नहीं, इसमें शर्मिंदा होने जैसा क्या है? इन्डिया की लेडी शर्मिंदा कैसे हो सकती हैं? आर्यपुत्री कहलाती हैं। आर्यपुत्री शर्माती नहीं। शर्माना नहीं चाहिए। तूने कितना अच्छा मुझे लिखकर दिया था। इसलिए तेरे लिए मैं यह सब कर रहा हूँ और मेरी मेहनत बेकार जाएगी,

ऐसा सोचकर यह सब नहीं करूँ? यह तो मेरी मेहनत फल देगी। क्या पूछोगी बताओ न? तू कभी सब्ज़ी खरीदकर लाई है बाजार से? तुम्हें भिंडी लेने भेजा हो तो तुम ले आती हो क्या? उसमें फिर बासी नहीं निकलती?

प्रश्नकर्ता : छाँटकर लाती हूँ न!

दादाश्री : तुम्हें लेना आता है कि यह बासी है और यह ताज़ा है ऐसा? तब तो तुम्हारी मदर होशियार है ऐसी! वर्ना मेरे पास सीखने आया था एक। वह तो डबल ग्रेज्युएट था। तो उसे मैंने सब्ज़ी लेने भेजा। मुझसे कहता है, 'सब्ज़ी मुझसे मंगवा रहे हैं?' मैंने कहा, 'इतना आ जाए, उसके बाद तुम्हें दूसरा सीखाऊँगा।' तब कहता है, 'सब्ज़ी में क्या सीखना है?' 'लेकिन तू ला तो सही! आज भिंडी ले आना।' उसमें पाँच तो ऐसी थी कि इस तरह तोड़ें तो टूटे नहीं। तब मैंने कहा, 'देख, तेरी भूल है?' 'हाँ, भूल तो ज़रूर है'। तब मैंने कहा, 'यह जो तू कह रहा था, लेकिन सब्ज़ी में सीखने जैसा है या नहीं?' 'सीखने जैसा है।' मैंने कहा, 'कल तू लौकी लाना।' 'यह लौकी अच्छी है न', उस दुकानदार से पूछता है, 'फिर वहाँ पर दादाजी डाँटेंगे'। वह व्यापारी क्या कहता है?

प्रश्नकर्ता : बहुत अच्छी है।

दादाश्री : तो ले आया, वह लौकी इतनी कड़क थी कि यों नाखून से दबाकर देखा उसे, तो उसमें नाखून गया ही नहीं। तब मैंने कहा, 'अरे, आज ऐसी लौकी लाया?' दुकानदार ने कहा था कि 'बहुत अच्छी है'। वह तो कहेगा ही न, वह तो बेचने बैठा है। 'अरे, तू ऐसा कैसा पढ़ा-लिखा है? इसे पढ़ाई कैसे कहेंगे भला? अब टिकेगा नहीं न मेरे पास! लोग सीखने आते हैं, पर टिकते नहीं। इसलिए मुझे थोड़ी नरम परीक्षा करनी पड़ती है। वर्ना चला जाएगा वापस!

अनुभवी का ले लाभ

प्रश्नकर्ता : ये मेरी छोटी बेटी पूछती है, यों ही कैसे शादी कर सकते हैं, फिर अपनी पूरी लाइफ ही बिगड़ेगी न! पहले लड़के को ठीक से देखें-करें, उसके बाद पता चलेगा न कि लड़का अच्छा है या नहीं! फिर शादी होती है। ऐसा यह मुझसे प्रश्न पूछती रहती है। तो दादा, इसका सोलूशन क्या है इन बच्चों के लिए?

दादाश्री : सभी देखकर ही शादी करते हैं न, बाद में मार-पीट और झगड़ा (करते हैं न)! जिन्होंने देखे बिना शादी की उनका बहुत अच्छा चलता है क्योंकि कुदरत ने दिया है। जबकि उसने खुद ने अक्ल लगाई है।

एक लड़का अपने फादर से कहता था, अभी ही, पैसेवाला, अच्छे परिवार का। वह लड़का अपने फादर को कहता है, 'मुझे शादी नहीं करनी है।' वह तो फिर उसके फादर दिखाते थे, फिर भी यह नापसंद करता था। फिर उसके फादर कहने लगे कि, 'यह लड़का ऐसा करता है। इसके लिए कुछ उपाय कीजिए न।' मैंने लड़के को कहा, 'व्यवस्थित नहीं है? तुझे बहु ला दें वह व्यवस्थित नहीं है?' तब कहता है, 'हाँ, मुझे व्यवस्थित पर बहुत भरोसा है।' मैंने कहा, 'भरोसा है तो शादी कर न, खुद की पसंद बिना। जिस ज्ञान पर भरोसा है, उस ज्ञान से ही चल न! हम सब यहाँ से जाते हैं, तो किस आधार पर चलते हैं? गाड़ी टकराएगी नहीं उस आधार पर चलते हैं न! कभी-कभी टकराती भी है पर क्या रोज़ टकराती है? इसलिए अंदाजे से चल न अपने आप।' फिर मैंने कहा, 'फादर को तू कह दे कि आप जिसे पसंद करोगे उससे मैं शादी करूँगा'। फिर उसके पिता पसंद कर लाए तो उसने तुरंत कह दिया कि, 'आप जिसे पसंद करोगे उससे मैं शादी करूँगा।' फिर शादी के

बाद वह मुझसे कहता है कि, 'ज़रा सा कलर ऐसा है।' मैंने कहा, 'वह कहाँ देखा फिर तूने! आम मीठा है या नहीं वह पता कर न!' कलर तो किसी आम का हल्का सा हरा दिखाई देता है ज़रा सा, बहुत पीला न दिखता हो तो, फिर उसके बाद उसने आम चखा। चखा न तो, 'आम बहुत अच्छा निकला' कहता है। तब मैंने कहा, 'हाँ।' उसके फादर भी खुश हो गए कि, 'ओहोहो! इस लड़के को आपने इतना सब दिया!'

चीज़ हो तो देखने के बाद अच्छी निकलती है, ऊपर गेरेन्टी लिखी होती है। चीज़ के ऊपर गेरेन्टी लिखी होती है, साल भर चलेगी या पाँच साल चलेगी। दूसरी चीज़ हो तो हम जानते हैं कि यह चीज़ ऐसी ही होगी और इस चीज़ का कुछ पता चलता है अंदर से खोलते हैं तब?

प्रश्नकर्ता : कुछ पता नहीं चलता।

दादाश्री : इसलिए ऊपर से जो सुंदर दिखता है, वह अंदर से खराब ही निकलता है, कचरा ही निकलता है। किसी गाँव जाना हो, तो आप जा रहे हों और तीन रास्ते आएँ, तो किस रास्ते पर जाना चाहिए? आपको क्या करना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : सीधा जाना चाहिए।

दादाश्री : सीधा? नहीं, नहीं। तीन रास्ते हैं, उनमें से कौन सा सही रास्ता है आपके गाँव जाने का?

प्रश्नकर्ता : नहीं, पता न हो तो।

दादाश्री : तो फिर तेरे कहे अनुसार उन दोनों को चलाएगी या उनके कहे अनुसार तू चलेगी?

प्रश्नकर्ता : वे लोग कहें उस अनुसार।

दादाश्री : हाँ, इसलिए इसमें किसी से पूछो आप। शादी की बाबत में तुझे देखने का अधिकार है लेकिन उनको भी पूछो कि इस प्रकार के आम आपने पहले खाए हैं, तो कभी वे खराब निकले हैं? तब वे तो जानते हैं कि ये तो खट्टे निकलते हैं। तू न खाएँ तो अच्छा होगा न पहले से! पहले सभी ने आम खाएँ हैं, इन लोगों ने और तुझे तो नए ही खाना है।

रात के एक बजे हो और कोई रिश्तेदार आया हो, वह कहे, 'मुझे कुछ जगहों को देखने जाना है' तो उसे अकेले को जाने देंगे। पर क्या तुझे अकेली को जाने देंगे?

प्रश्नकर्ता : मुझे अकेली नहीं जाने देंगे, किसी के साथ।

दादाश्री : वह अच्छी बात है न, न जाने देना वह सही है या गलत?

प्रश्नकर्ता : सही।

दादाश्री : हाँ। ऐसा सब समझना पड़ेगा। बैगन की सब्जी भी बनाना आना चाहिए। सब कुछ आना चाहिए या नहीं आना चाहिए?

समझने की बात होती है। इसलिए सोचना, यह तेरे कुछ हित में है या अहित में है? तेरे लिए पूरी तरह से हित में है या थोड़े अहित में भी है?

प्रश्नकर्ता : पूरी तरह से हित में।

दादाश्री : यह तो, तेरा मन पूरी तरह से तेरे हित में नहीं होता। ये सभी तो पूरी तरह से हित में होते हैं। कई बार तेरा मन गलत भी करता है? कभी कनिंगनेस (चालाकी) करता है क्या?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : हाँ, उस मन की तरह ये लोग कनिंगनेस नहीं करेंगे। इसलिए सब कुछ पूछना आप, पूछे बिना कैसा होगा फिर? लड़का तो ऐसा समझता है कि पिताजी इस बारे में क्या जानेंगे, मुझे शादी करनी है उसमें? अरे, पिताजी

ने खाए हैं आम, वे रत्नागिरी या दूसरे। वे खट्टे निकले होंगे न। और फिर लड़के (फॉरेन की लड़की) शादी करके ले आते हैं! मुझसे कहते हैं कि 'एकदम गोरी है।' 'अरे, काटने पर खट्टी निकलेगी। पहले दिन ही नहीं खा पाएगा तू, फिर उसके साथ साल कैसे बिताएगा तू? उसके बजाय अपनी (इन्डियन) ढूँढ लाए वह अच्छी!'

नहीं लगाओ बुद्धि पसंदगी में

बुद्धि तो दो ही चीज़ देखती हैं, फायदा और नुकसान। बेटे के लिए बहु ढूँढनी हो तो अच्छी ही ढूँढती रहती है।

प्रश्नकर्ता : बहु को सिलेक्ट करने के लिए बुद्धि अच्छा-अच्छा दिखाएँ, तो उस समय क्या करना चाहिए हमें, बुद्धि का उपयोग नहीं करना चाहिए?

दादाश्री : आपको तो उसे लड़के को दिखा देना चाहिए, उसके बाद दूसरे संयोग मिल जाएँ तो आपको 'यस' कह देना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दूसरे संयोग हमें देखने चाहिए न, परिवार या जाति या यों सामान्य...

दादाश्री : वे संयोग कब मिलते हैं, कि जब वह काम होना हो उस अनुसार ही होता है।

प्रश्नकर्ता : सारे एविडेन्सीस मिलते हैं तभी शादी होती है।

दादाश्री : तभी शादी होती है, वर्ना नहीं होती। इसलिए फिर उसके लिए घबराना नहीं है। परिवार खराब मिला और जो भी हुआ वह फिर तेरा हिसाब था वही मिला। वर्ना यदि बुद्धि से ढूँढने जाओगे न, तो इस गाँव में एक भी मॉडल अच्छा नहीं मिलेगा। बुद्धि से ढूँढा हुआ तो मिलेगा ही कैसे?

प्रश्नकर्ता : अब मान लो कि लड़के ने ऐसा कहा हो माता-पिता को कि आप जो भी पसंद करो वह सही। तो फिर माता-पिता की ज़िम्मेदारी आ गई, तो माता-पिता को क्या करना चाहिए तब?

दादाश्री : फिर आपको ढूँढ देना चाहिए। आपके ढूँढने के बाद आपको समझना चाहिए कि यह ढूँढ लिया है अभी तो वह छोटा है, बड़ा होगा तब उसकी बुद्धि खिलेगी। तब फिर कहेगा, 'मैंने तो हाँ कहा था लेकिन आपको नहीं समझना था?' तो फिर आपको धीरे से हल लाना पड़ेगा।

सिलेक्शन में नहीं निकालना चाहिए मीन-मेख

शादी के लिए लड़की देखने जाता है, तो उससे क्या कहता है? इस तरफ घूमों! वह क्या देखता होगा घूमाकर?

प्रश्नकर्ता : वह सभी तरफ से अच्छी है, कैसी है वह सब देखता है। उसका सौंदर्य देखता है, निरखता है फिर।

दादाश्री : सौंदर्य तो चेहरे पर दिखाई देता है, लेकिन सुडौल है या नहीं? पीठ कितनी चौड़ी है, अरे वह सब देखता है, वह घूमाकर। यह तो मज़ाक ही है न, स्त्रियों का मज़ाक ही कहा जाएगा न?

प्रश्नकर्ता : मज़ाक कहा जाएगा।

दादाश्री : कितना बड़ा मज़ाक! यह जमाना मज़ाक करने का है, तो स्त्रियों का मजाक हो रहा हैं। ऐसे घूमो, वैसा घूमो।

आजकल तो लड़के लड़कियों को पसंद करने से पहले बहुत मीन मेख निकालते हैं। 'बहुत लंबी है, बहुत छोटी है, बहुत मोटी है, बहुत पतली है, ज़रा काली है।' घनचक्कर, एक लड़का ऐसा कह रहा था, तो मैंने उसे डाँटा। मैंने कहा, 'तेरी मदर भी बहू बनी थी। तू किस प्रकार का आदमी है?' स्त्रियों का ऐसा घोर अपमान!

अगर लोग मुझसे कहें कि, आपको छूट है, आपको इस लड़के को जो कहना हो कहिए। वह लड़का भी कहे कि मुझे जो कहना है वह कहिए, तब मैं कहूँगा कि अरे, 'यह लड़की भैंस हैं क्या, जो इस तरह देख रहा है! भैंस को चारों ओर से देखना पड़ता है।

अरे, शर्म नहीं आती? मूर्ख! स्त्रियों का अपमान करते हैं ये लड़के! कैसी लड़कियाँ हैं बेचारी! लेकिन 'ऐसे घूमो, वैसे घूमो' कहते हैं। किस तरह के मूर्ख हो! लेकिन अब हम कुछ बोल नहीं सकते न! हम क्या राजा हैं? इस दुनिया के मालिक हैं? मालिकी बिना के मालिक! और आजकल तो लड़कियाँ भी कहने लगी हैं कि 'ज़रा ऐसे घूमो तो? आप ज़रा कैसे दिखते हो?' देखो, आपने इस तरह देखने की सिस्टम निकाली तो यह हालत हो गई है न आपकी? इसके बजाय सिस्टम ही न रखें तो क्या गलत है? यह शुरूआत आपने की तो आप ही फँस गए!

और तेरे पिताजी से पूछ न, कि आप माँ को इस तरह ले आए थे? पर ऐसा नहीं बोल सकते न, अविनयवाला! उन्हें कितना दुःख होगा!

यह तो फादर को कहता है, 'मुझे दिखाओ'। और देखे तो कहता है, 'ऐसे घूमो, वैसे घूमो'। अरे, क्या गाय-भैंस हैं जो तू ऐसा घूमा-घूमाकर देख रहा है! मोटी-पतली देख रहा है। अरे, तू पतली लाएगा और बाद में मोटी हो जाएगी तो? बेवजह घूमा-घूमाकर देखता है! फिर मैं उसे समझाता हूँ कि बुढ्ढी होगी तब कैसी दिखेगी, वह तेरी कल्पना में आता है? उस समय कैसी दिखनेवाली है? फिर चिढ़ होगी। उसके बजाय जो है वह सही, कहना चाहिए।

यह तो जैसे-जैसे उसके अंग-वंग बदलते जाते हैं न, वैसे-वैसे ऊबता जाता है लेकिन कह भी नहीं सकता और सह भी नहीं सकता। और स्त्री की तरह लें न, बुढ़ापा है तब भी स्त्री और जवानी में भी स्त्री, इस तरह से समझा हो तो क्या गलत है भाई? जान-बूझकर परेशान होते हैं न लोग!

आपने पसंदगी की, बाद में नहीं पसंद, ऐसा कैसे?

पत्नी रियलाइज़ करके लाया हो कि ऐसे घूमो, वैसे घूमो। बाद में मन में तय करता है कि नहीं, सही है, संग्रह (पूंजी, पैसा) सब कुछ देख लेता है, सब सही है। उसके बाद पसंद करता है और दस दिनों बाद खटपटें शुरू हो जाती हैं। अरे, तू देखकर तो लाया है न?

एक भाई डबल ग्रेज्यूएट था लेकिन शादी के बाद पत्नी के साथ बात नहीं करता था। पत्नी के पिता ने अच्छा खर्च करके शादी की थी। उसे मैंने कहा, 'अरे मैंने बात सुनी है, पत्नी के साथ तू बात नहीं करता'। तब वह कहता है, 'मुझे पसंद नहीं है'। मैंने कहा, 'मैं तुझे कहूँ कि बाज़ार से एक ताला ले आओ और तू ताला ले आए। फिर तू मुझसे कहे कि लीजिए यह ताला। उसके बाद तुम ही मुझसे कहो कि यह ताला मुझे पसंद नहीं। तो कितना खराब दिखेगा? तू ही लाया और फिर कहता है, पसंद नहीं है। खुद लाया इसलिए कहना चाहिए कि अच्छा ही है, मैं जो लाया हूँ, वह अच्छा है'।

यदि बाज़ार से आप ताला खरीद लाए और फिर कहो कि यह ताला तो यूज़लेस है, तो? यदि आपने खरीदा है और आप उसी ताले को खराब कहते हो, तो वह न्याय कहा जाएगा? अगर यह ताले के लिए ऐसा होना चाहिए, तब वह तो स्त्री है और वह वन ऑफ द पार्टनर है। फिफ्टी परसेन्ट पार्टनर है। उसके बाद छोटे-छोटे शेयर होल्डर आएँगे।

यह तो दस दिन हुए हों तब माँ ने ज़रा सीखाया हो कि बहु ज़रा खर्चीले स्वभाववाली है,

बहुत शौकीन है। ऐसा माँ ने सीखाया तो फिर हो गया, यह घनचक्कर भी ऐसा कहता है। अरे, माँ का सुनना चाहिए क्या? माँ, वह माँ है। तब एक कान माँ के लिए रखें और एक कान पत्नी के लिए रखें तो क्या गलत है? क्योंकि आप उसे पास करके लाए हैं न? माँ नापास करवाए तो भी माँ से कहें कि 'माँ' मैं तो उसे पास करके लाया हूँ, नापास करने नहीं लाया। मेरी पास की हुई है। इसलिए आप भी पास करो'। यह तो ताला अगर खुद पास करके लाया हो तो भी उसके लिए ऐसा रखना चाहिए कि अब ताला मैं लाया हूँ, इसलिए इसमें बदलाव नहीं हो सकता। बिगड़ा हुआ हो, तो आखिर में हथौड़ा मारकर, घिस-घिसकर ऑलराइट कर लेना चाहिए। क्योंकि अपनी भूल हुई हो तो सुधार लेना चाहिए। पर ये तो पत्नी की फज़ीहत करते हैं। अब, वाइफ मिलती है, वह भी कर्म के हिसाब से ही मिलती है। वह सब प्रारब्ध है। फिर क्लेश होता है तब, माता-पिता कहते हैं, 'अरे, तू देखकर लाया है और अब शोर मचा रहा है?' तब कहता है, 'अब, क्या करें?' आप ताला खरीदकर लाए हो और फिर लग नहीं रहा हो तो आपको समझ लेना है कि खुद की भूल है, यानी ताले का दोष नहीं है। अर्थात् पत्नी लेकर आए और वह झगड़ा करनेवाली निकली तो आपका दोष है। आप पास करनेवाले, बाद में फिर आप नापास करो तो वह शोभा देगा?

इच्छा तो सुख की ही

यह शादी किसलिए है? सुख के लिए है या दु:ख के लिए है?

प्रश्नकर्ता : जो मानो उसके लिए। जीवन जीना आए तो सुख, वर्ना दु:ख है।

दादाश्री : हाँ, लेकिन लोग शादी क्यों करते हैं? सुख के लिए ही न? लेकिन फिर दु:खी होते हैं। क्योंकि सुखी होना, दु:खी होना वह अपने हाथ की बात नहीं है, वह पूर्वजन्म में किए गए पुण्यकर्म के अधीन ही है सब कुछ। उसमें कोई चारा नहीं है, वे भुगतने ही पड़ेंगे। आपको दु:ख पसंद नहीं है?

प्रश्नकर्ता : ऐसा माना जाता है कि दु:ख के बाद का सुख बहुत अच्छा होता है। इसलिए दु:ख के बाद सुख आएगा ऐसा मानकर दु:ख सहन हो जाता है।

दादाश्री : लेकिन दु:ख पसंद हो तो सहन हो जाता है। नापसंद हो तो कैसे सहन हो पाएगा? इसलिए दु:ख हमें पसंद हैं ऐसा रखना चाहिए। दु:ख आए तब आप 'आओ भाई, बैठो', ऐसा कहना। 'दु:ख नहीं पसंद' ऐसा कहोगे तो फिर दु:ख बल्कि आप पर सवार हो जाएगा! दु:ख तो सभी को पसंद होगा, नहीं?

शादी के लिए 'प्रश्न'

प्रश्नकर्ता : मेरी शादी करने की इच्छा नहीं है, लेकिन माँ-बाप और अन्य रिश्तेदार शादी के लिए दबाव डाल रहे हैं, तो मुझे शादी करनी चाहिए या नहीं?

दादाश्री : यदि शादी करने की इच्छा ही नहीं हो तो, अपना यह 'ज्ञान' आपने लिया है इसलिए आप पार उतर सकोगे। इस ज्ञान के प्रताप से सब कुछ हो सकता है। मैं आपको यह समझाऊँगा कि किस तरह बरतना है और यदि पार उतर गए तब तो अति उत्तम है! आपका कल्याण हो जाएगा!

प्रश्नकर्ता : शादी करवाने के लिए सभी लोग बहुत फोर्स (दबाव) कर रहे हैं।

दादाश्री : आपको 'व्यवस्थित' समझ में आ गया है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : 'व्यवस्थित' तो समझ में आ गया है।

दादाश्री : तो 'व्यवस्थित' के बाहर किसी का भी चलनेवाला नहीं है। इसलिए 'व्यवस्थित' पर छोड़कर तय रखो, दृढ़ निश्चय करो कि मुझे शादी करनी ही नहीं है।

लेकिन शादी किए बिना तुझे कैसे चलेगा?

प्रश्नकर्ता : कौन से जन्म में अनुभव नहीं किया है?

दादाश्री : किस जन्म में अनुभव नहीं किया! बकरी में, कुत्ते में, गधे में, बाघ में, जहाँ गए वहाँ यही अनुभव किए हैं न?

जैसा निश्चय, वैसा 'व्यवस्थित'

प्रश्नकर्ता : हम अगर शादी नहीं करने का निश्चय करें, तो फिर 'व्यवस्थित' वैसा ही आएगा?

दादाश्री : शादी नहीं करने का ज़बरदस्त निश्चय हो तो शादी नहीं होगी। लेकिन निश्चय ऐसा नहीं होना चाहिए कि फिर दूसरे दिन भूल जाए। निश्चय किसे कहेंगे कि निरंतर याद रहे। निश्चय भूल गए तो फिर शादी होगी, वह बात निश्चित है। निश्चय नहीं भूले, तो शादी नहीं होगी, उसकी मैं गारन्टी लिख देता हूँ। क्योंकि जिस गाँव हमें जाना है, वह तो भूलना नहीं चाहिए न? हमें बोम्बे सेन्ट्रल जाना हो तो फिर अगर उसे भूल जाएँगे तो चलेगा? वह तो याद रहना चाहिए न? उसी तरह आपने 'शादी नहीं करनी है' ऐसा जो निश्चय किया है, उस निश्चय को भूलोगे नहीं, तो फिर आपकी शादी नहीं होगी। वे सभी शादी करवाना चाहें, लड़का ढूँढ लाएँ, फिर भी कुदरत मेल नहीं बैठने देगी। बाकी यह संसार तो निरा दु:ख का समुद्र ही है, इसका अंत ही नहीं आता!

जय सच्चिदानंद

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में सत्संग कार्यक्रम अडालज में

2 मई (शनि) शाम 5 से 7 – **सत्संग** और **3 मई** (रवि) शाम 4-30 से 8 – **ज्ञानविधि**

20 से 24 मई (बुध से रवि) **(PMHT पेरेन्ट्स महात्मा) – सत्संग शिविर**

सूचना : यह शिविर ज्ञान लिए हुए विवाहित महात्माओं के लिए ही रखी गई है। रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। शिविर रजिस्ट्रेशन संबंधित जानकारी **Akonnect** ऐप के द्वारा दी जाएगी। पूज्यश्री के सत्संग का हिन्दी और अंग्रेजी भाषा में ट्रान्सलेशन होगा।

राष्ट्रीय हिन्दी शिविर – वर्ष 2026

3 जून (बुध)	सुबह 10-30 से 12	– आप्तपुत्र **सत्संग**
	शाम 5-30 से 7	– **हिन्दी आप्तवाणी पुस्तक पर पारायण** (पेज नं. 28)
4 जून (गुरु)	सुबह 10 से 12	– आप्तपुत्र **सत्संग**
	शाम 5 से 8	– **ज्ञानविधि**
5 जून (शुक्र)	सुबह 10-30 से 12-30	– **शिविरार्थीओं के लिए पूज्यश्री के चरणस्पर्श दर्शन**
	शाम 5-30 से 7	– **सत्संग** (टोपिक – पांच आज्ञा का महत्व)
	रात 9 से 10-30	– **श्री सीमंधर स्वामी की छोटी प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा**
6 जून (शनि)	सुबह 10-30 से 12	– **सत्संग** (टोपिक – PMHT)
	शाम 5-30 से 7	– **सत्संग** (टोपिक – गर्वरस)
7 जून (रवि)	सुबह 10-30 से 12 और शाम 5-30 से 7 – प्रश्नोत्तरी **सत्संग**	

सूचना : यह शिविर गुजराती भाषा नहीं जानने वाले मुमुक्षु-महात्माओं के लिए साल में एक बार हिन्दी में विशेष रूप से आयोजित की जाती है। शिविर में भाग लेने के लिए रजिस्ट्रेशन जानकारी **Akonnect** ऐप के द्वारा दी जाएगी।

अडालज : पूज्यश्री का 56वाँ ज्ञान दिन : ता. 6 मार्च 2026

समाधि पर दर्शन

पूज्यश्री का अभिवादन

महात्माओं के आशीर्वाद लेते हुए

त्रिमंदिर के दर्शन

सत्संग

गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्रभाई पूज्यश्री के आशीर्वाद लेते हुए

लोनावाला : मुंबई के महात्माओं के लिए शिविर : ता. 9 से 11 मार्च 2026

सत्संग

भक्ति

गरबा

दर्शन

पुणे : सत्संग-ज्ञानविधि : ता. 13 से 15 मार्च 2026

अप्रैल 2026
वर्ष-21 अंक-6
अखंड क्रमांक - 246

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Licensed to Post Without Pre-payment
No. PMG/NG/036/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

जात-पात, देश के अनुसार पसंद सही, लेकिन अंत में 'व्यवस्थित'

(इस इन्टरकास्ट शादी के बारे में) हमारी राय नहीं होती। वह तो जहाँ उसका हिसाब होता है वहीं शादी होती है। फिर इसमें अभिप्राय देने की ज़रूरत ही क्या रही अब! इसलिए हमें उसमें कोई दु:ख नहीं होता। वह हमें गलत नोंध नहीं होता कि यह गलत किया है ऐसा। हिसाब होता है वहाँ जाकर ही शादी करते हैं, फिर उसका क्या करना है? लेकिन खुल्ला नहीं कह सकते। खुल्ला तो उनको कहते हैं कि 'लड़कों, आपकी जाति में ही शादी करना'। बाद में जब परिणाम आता है तब उसे मत डाँटना। दूसरी जाति में शादी की हो तो भी नहीं डाँटते। हिसाब बिना होता ही नहीं है न! यह तो हम जानते हैं कि किस आधार पर होता है! वह नहीं करता बेचारा। वह कर्ता नहीं है, कर्ता अलग है। इसलिए हमें उसके प्रति वह (अभाव) नहीं रहता।

\- दादाश्री

DBF • Adalaj

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Multiprint, Opp. H B Kapadiya New High School, Chhatral - Pratappura Road, At - Chhatral, Tal : Kalol, Dist. Gandhinagar – 382729.